भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 6 | **जनवरी** 2005 | **अंक** 1

टेलीविजन को देखो

फेंको पुस्तक
देखो अब शुरू होता है हमारा सबसे दिलचस्प कार्यक्रम
उसके बाद है फिर एक उससे भी दिलचस्प कार्यक्रम
पुस्तक को अब उठा नहीं पाओगे
बेहतर है उसे उठाकर अलग रख दो
शेल्फ पर टिका दो
उसमें फँफूद लगने दो

किताब एक खतरनाक चीज है
आदमी के हाथों में उसके जाते ही
सल्तनत के पाये डगमगाने लगते हैं
किताब की चुप्पी में बन्द चीखें और ललकारें
किताब को खोलते ही
बारूद की गन्ध की तरह उठने लगती हैं
रक्त संचार में घुलने लगती है
किताबों ने तोड़ा है सामंती ढाँचे को जहाँ तक बहुत ठीक
लेकिन अब खतरा हैं वे
उन्हें कैद करने की जरूरत
किताबों के लिए खोले हुए तो हैं आलमारियों की धारियोंवाले पुस्तकालय
पुस्तकालयों के पेट में
आलमारियों के पटों में
बन्द रहने दो किताबों को
सजावटी चीजों की तरह
देखो तो कितनी खूबसूरत किताबें छपने लगी हैं यहाँ
महँगी हुई तो क्या
नयनाभिराम—तुम्हारी बौद्धिक संस्कृति की सुदर्शन पृष्ठभूमि
यदि कभी आँखें उचटें तो
दूर से निहारने के काबिल
दूर से सुनाई नहीं देती सिसकियाँ
आलमारी से उठती हुई
औचक सन्नाटे में
भले महसूस हो तुम्हें
एक घुटी हुई सिसकी अपने भीतर
कभी किसी दिन
तब देर हो चुकी होगी

शेष पृष्ठ 2 पर

कितने हिन्दुस्तान!

कमलेश्वर के लोकप्रिय उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' की पंक्तियाँ हैं—

''अदालत ने पूछा—तुम कौन हो?

उन्होंने उत्तर दिया—हम कश्मीर में हिन्दू पर हिन्दुस्तान में कश्मीरी कहलाते हैं।''

आज यही स्थिति देश के सभी प्रदेशों की है। प्रत्येक प्रदेश भारत का अंग है किन्तु सभी प्रदेश अपने राजनीतिक सत्ता-स्वार्थ के कारण भारतीय होते हुए अपने को भारतीय कहलाने के बजाय मद्रासी, कर्नाटकी, केरली, आन्ध्रप्रदेशी, उड़िया, बंगाली, बिहारी, पंजाबी, महाराष्ट्री, गुजराती आदि कहलाना पसन्द करते हैं। हिन्दुस्तानी या भारतीय कहलाने में संकोच होता है। अपने ही देश में राष्ट्रीय पहचान नहीं बन पा रही है। आजादी के इतने वर्षों बाद भी देश को जोड़नेवाली एक राष्ट्रभाषा को सर्वमान्यता नहीं मिल सकी। आज देश में मातृभाषा, राजभाषा और राष्ट्रभाषा के बीच द्वन्द्व निरन्तर चल रहा है, हमारा राष्ट्रीय व्यक्तित्व क्या है, राष्ट्रीय पहचान क्या है, इसे आज तक निश्चित नहीं कर सके। प्रत्येक प्रदेश अपनी राजनीतिक सत्ता बनाये रखने के प्रयास में लगे हैं। इसका दुष्परिणाम क्या हो रहा है और आगे क्या होगा, इस पर विचार करने की आवश्यकता है।

राष्ट्र को जोड़ने वाली राष्ट्रभाषा आज कहाँ है? अहिन्दीभाषी प्रदेशों की मातृभाषा तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, गुजराती, मराठी, बंगला, उड़िया, पंजाबी आदि हैं और दूसरी भाषा है अंग्रेजी। हिन्दी न तो राजभाषा है, न राष्ट्रभाषा, सरकारी दस्तावेजों में हिन्दी धरोहर की भाँति राजभाषा के पद से सुशोभित हो रही है, किन्तु जन-जन को जोड़नेवाली उत्तर से दक्षिण, पूर्व से पश्चिम की भाषा नहीं बन सकी। भाषा राजनीति का माध्यम नहीं, भावनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम है।

भाषा में देश की सभ्यता और संस्कृति सन्निहित होती है, वह जन-जीवन को प्रभावित करती है। देश की समस्त भाषाओं में भारतीय चिन्तन, दर्शन और जीवन अभिव्यक्त हैं, वे सभी राष्ट्र की निधियाँ हैं। यह अनेकता में एकता का बोध कराती हैं। अंग्रेजी अबाध गति से देश के जीवन में ढल रही है, अपनी सभ्यता और संस्कारों के साथ समाज में प्रवेश कर रही है, वैश्वीकरण की ओर ले जा रही है, प्रदेशों की राजनीति बिखराव ला रही है। प्रत्येक प्रदेश में राजनेता अपने प्रदेश के राष्ट्रनेता हैं—तमिलनाडु में जयललिता, बिहार में लालू यादव (लालूचरितमानस, लालू-चालीसा के इतिहास-पुरुष), हरियाणा में चौटाला परिवार, उत्तर पूर्व प्रदेशों के अपने इतिहास पुरुष, इसी प्रकार सभी प्रदेशों के नेता अपनी पहचान बनाते जा रहे हैं। आज राष्ट्रपुरुष अपनी पहचान खोते जा रहे हैं, प्रदेश के राजनीतिज्ञ और तथाकथित सत्तापुरुष अपने अनवरत प्रचार तथा बच्चों की पाठ्य-पुस्तकों में प्रवेश कर स्वयं को राष्ट्रपुरुष घोषित कर रहे हैं। यदि यही होता रहा तो एक दिन कहना पड़ेगा—अपने ही देश में, 'कितने हिन्दुस्तान!'

— पुरुषोत्तमदास मोदी

पृष्ठ 1 का शेष

तब देर हो रही होगी
अगला सीरियल शुरू होने में
तब तक भूल गए होंगे तुम्हें बचपन की लोरियों के शब्द
ये किताबों की बाँहें हैं
आदमी के ईद-गिर्द
जिन्हें सबसे पहले तोड़ता है
पूँजीवाद का रंगीन बुलडोजर
किताबों की उजली पगडंडियों को मिटाता है
पूँजीवाद की राह बनाता यह रंगीन रोडरोलर
तुम्हारे स्मृतिपट को पथ बनाता है
तिजारती यातायात का
जिसके रंग-बिरंगे ट्रैफिक-संकेतों के गुप्त नियन्त्रण-कक्ष में
जलता है
सब कुछ बेचने-खरीदने के युगबोध का स्पिरिट-लैम्प
अपनी लौ पर हठी मन को काँच की नली की तरह मोड़ता हुआ।

— ज्ञानेन्द्रपति

राजकमल द्वारा प्रकाशित 'संशयात्मा' पुस्तक से

किताबों के पास जाओ

जब तुम्हारा मन
कहीं न लगे
तो किताबों के पास जाओ
उनके पास बैठो, बातें करो
उन्हें सुनो, गुनो
तुम देखोगे, तुम्हारी सारी बेचैनी
छू-मंतर हो गई
जब तुम्हें
कहीं कुछ न दिखाई दे
अंतहीन अँधेरा तुम्हारे आगे खड़ा हो
तो किसी किताब में लिखी
किसी प्रार्थना का ध्यान करो
तुम्हें तुम्हारा सम्पूर्ण पथ
ज्योर्तिमान दिखाई देगा
जब सफलता और तुम्हारे मध्य की खाई में
छटपटा रहा हो तुम्हारा वजूद
तो 'अपने' और 'सफलता' के बीच
किसी किताब को खड़ा करो
यह पुल का काम करेगी
और
तुम जा सकोगे बिना किसी अवरोध के
इस पार से उस पार।

— जय चक्रवर्ती, रायबरेली

प्रो० वासुदेवशरण अग्रवाल और कला एवं संस्कृति के अध्ययन में उनका योगदान

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के कला-इतिहास एवं पर्यटन-प्रबन्ध विभाग द्वारा प्रो० वी०एस० अग्रवाल जन्म शताब्दी वर्ष में कला एवं संस्कृति में उनके योगदान पर आयोजित त्रिदिवसीय गोष्ठी कला-इतिहास एवं पर्यटन-प्रबन्ध विभाग में सम्पन्न हुई। इस संगोष्ठी का उद्घाटन डॉ० कपिला वात्स्यायन, प्रो० दयानाथ त्रिपाठी, प्रो० आनन्दकृष्ण द्वारा 28 नवम्बर 2004 को सम्पन्न हुआ। इसके बाद कुल पाँच शैक्षणिक सत्रों में तीन दिनों में प्रो० रतन परिमू (बड़ोदरा), डॉ० एम०एल० निगम (हैदराबाद), डॉ० आर०डी० चौधरी (पूर्व महानिदेशक, राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली), डॉ० आर०सी० अग्रवाल (जयपुर), प्रो० रमानाथ मिश्र (शिमला), प्रो० के०के० थपल्याल (लखनऊ), प्रो० एस०एन० कपूर (लखनऊ), डॉ० चन्द्रमणि सिंह (जयपुर), डॉ० एस०डी० त्रिवेदी (लखनऊ), प्रो० आनन्दकृष्ण, डॉ० एन०पी० जोशी, प्रो० जयप्रकाश सिंह, प्रो० माहेश्वरीप्रसाद, डॉ० श्यामनारायण पाण्डेय, प्रो० अवधेशप्रधान, प्रो० विदुला जायसवाल, डॉ० टी०के० विश्वास, प्रो० दीनबन्धु पाण्डेय, डॉ० आनन्दप्रकाश श्रीवास्तव, डॉ० शान्तिस्वरूप सिन्हा, डॉ० आभा मिश्रा, डॉ० जितेन्द्रप्रताप सिंह एवं डॉ० श्रवणकुमार सिंह (समस्त वाराणसी) द्वारा कुल 22 शोध पत्र प्रस्तुत किये गये, जिनमें प्रो० वासुदेवशरण अग्रवाल के प्रिय कला, संस्कृति, लोककला, हिन्दी, अभिलेख, सौन्दर्यशास्त्र, मुद्राशास्त्र, मृण्मूर्तिकला जैसे अध्ययन क्षेत्रों पर खोजपरक लेख प्रस्तुत किये गये और उन पर उपस्थित विद्वानों द्वारा समीक्षात्मक चर्चा भी की गयी। संगोष्ठी के निदेशक प्रो० मारुतिनन्दनप्रसाद तिवारी ने बताया कि इनमें न केवल प्रो० वासुदेवशरण अग्रवाल के व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों और अवदानों की चर्चा की गई परन्तु उनके विभिन्न क्षेत्रों में किये गये कार्यों का विश्लेषण और मूल्यांकन भी किया गया। सभी ने यह महसूस किया कि आज भी उनके कार्य अध्येताओं के लिए मानक हैं क्योंकि उनमें जो विशिष्ट और लोक की समन्वयात्मक और परस्परता की व्यापक दृष्टि है, उस समग्र भाव के बिना, अखण्ड भारत और उसकी अखण्ड संस्कृति के विषय में चिन्तन करना प्रो० अग्रवाल के चिन्तन धारा के प्रतिकूल होगा। संगोष्ठी में सभी विद्वानों ने अतीत की चर्चा वर्तमान से जोड़ते हुए की और भविष्य की सम्भावनाओं का भी संकेत दिया। भविष्य के अध्ययन की दिशा निर्धारण में एक व्यापक और समग्र दृष्टि समाज के सभी स्तरों, क्षेत्रों और इस प्रकार सम्पूर्ण लोक को ध्यान में रखकर किये जाने की आवश्यकता को रेखांकित किया गया। आगे के शोध में भारतीय इतिहास और संस्कृति में साहित्य-शास्त्र और पुरातत्त्व-कला के बीच परस्परता और संवाद के आधार पर ही आग्रह और पूर्वाग्रहों से रहित भारतीय कला और इतिहास लेखन की बात लगभग प्रत्येक शोधपत्र में अलग-अलग सन्दर्भों और प्रमाणों के साथ उजागर की गयी क्योंकि इतिहास का कोई भी पक्ष जो कला और संस्कृति की व्याख्या से सम्बन्धित होता है, उसमें सत्य की स्थापना और लोकमंगल चर्चा वर्तमान तथा भविष्य के साथ जुड़कर ही की जाती है। विद्वानों ने इस बात को भी रेखांकित किया कि प्रो० अग्रवाल के विस्तृत जीवन पर शोधकार्य होना चाहिए, जिसमें उनके व्यक्तित्व और लेखन विधा के विकास को रेखांकित किया जाय और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी की पत्रिका **प्रज्ञा** का भी एक विशेषांक भी उनकी स्मृति में निकाला जाना चाहिए। साथ ही प्रो० वासुदेवशरण अग्रवाल 'शब्दकला कोष' भी बनाया जाय।

डॉ० सुदर्शनलाल जैन, डॉ० दयानाथ त्रिपाठी, डॉ० कपिला वात्स्यायन, डॉ० राय आनन्दकृष्ण, डॉ० मारुतिनन्दनप्रसाद तिवारी

प्रो० अग्रवाल के लेखन दृष्टि में अतीत को वर्तमान से जोड़ने और मृण्मय से चिन्मय भारत की परिकल्पना और भूमि, जन और संस्कृति तीनों के समन्वय से युक्त प्रो० अग्रवाल के लेखन प्रक्रिया को रेखांकित किया।

प्रो० अग्रवाल की सम्पूर्ण भारतीय दृष्टि और उसमें समस्त लोकमंगल का चिन्तन, उनके शब्द, उनकी लोक शब्दों की रचना, कला की सामाजिक सांस्कृतिक व्याख्या, प्रतीक आदि का विश्लेषण—इन सब पर विस्तार से अध्ययन किया जायेगा क्योंकि प्रो० अग्रवाल एक व्यक्ति ही नहीं वरन् भारतीय विद्या के विश्वकोश रहे हैं। उनकी सम्पूर्ण रचना का संग्रह भी किया जाना चाहिए।

समापन-सत्र में प्रो० प्रमोदचन्द्र की अध्यक्षता में प्रो० वासुदेवशरण अग्रवाल के वरिष्ठतम चार विद्वान कला मर्मज्ञ शिष्यों—डॉ० एन०पी० जोशी, प्रो० आनन्दकृष्ण, श्री आर०सी० अग्रवाल और डॉ० श्यामनारायण पाण्डेय का विभाग की ओर से शाल भेंटकर सम्मान भी किया गया।

महात्मा गाँधी के नाती गोपालकृष्ण गाँधी ने पश्चिम बंगाल के राज्यपाल के रूप में बांग्ला भाषा में शपथ लेनी चाही थी। कोलकाता हाइकोर्ट के अस्थायी मुख्य न्यायाधीश अजयनाथ राय ने कहा—संविधान की भाषा अंग्रेजी है। संविधान अंग्रेजी में ही लिखा है। हिन्दी राजभाषा है। इसलिए उसमें भी शपथ ली जा सकती है। शपथ ग्रहण इन्हीं दो भाषाओं में हो सकता है बांग्ला में नहीं।

सम्मान-पुरस्कार

डॉ० बुद्धिनाथ मिश्र को निराला सम्मान

भारती परिषद, उन्नाव के 51वें काव्य समारोह में 27 नवम्बर, 2004 को सुप्रसिद्ध कवि-साहित्यकार एवं ओएनजीसी के मुख्य प्रबन्धक (राजभाषा) **डॉ० बुद्धिनाथ मिश्र** को 'निराला सम्मान' से अलंकृत किया गया। इस अवसर पर उन्हें भारती परिषद के पदाधिकारियों द्वारा सरस्वती की प्रतिमा भेंट की गयी और सुप्रसिद्ध कवि-शायर पद्मश्री बेकल उत्साही द्वारा प्रशस्ति पत्र अर्पित किया गया। समारोह के संयोजक श्री नीरज अवस्थी ने डॉ० मिश्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संक्षिप्त परिचय दिया तथा प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष श्री मुन्ना सिंह 'अवधूत' ने शाल ओढ़ाकर सम्मान किया। श्री उत्साही और श्री मिश्र ने 'स्मारिका' का लोकार्पण भी किया।

इस अवसर पर जनपद के यशस्वी कवि स्व० डॉ० शिवमंगल सिंह 'सुमन' की स्मृति में कवि-गीतकार श्री कैलाश गौतम को 'सुमन सम्मान' से अभिनन्दित किया गया।

भारत सरकार का प्रशस्ति पत्र

भारत सरकार के गृह मंत्रालय द्वारा 29-30 अक्टूबर, 2004 को चण्डीगढ़ में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में **डॉ० बुद्धिनाथ मिश्र** को अहिन्दीभाषी क्षेत्र में भारत सरकार की राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन के लिए प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। भारत सरकार के राजभाषा सचिव श्री बालेश्वर राय की अध्यक्षता में सम्पन्न इस समारोह में केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री श्री माणिकराव गवित ने यह प्रशस्ति पत्र उन्हें प्रदान किया।

नीलेश रघुवंशी को अग्रवाल स्मृति सम्मान

युवा कवयित्री **नीलेश रघुवंशी** को वर्ष 2004 के प्रतिष्ठित केदारनाथ अग्रवाल स्मृति सम्मान उनके दूसरे कविता संग्रह 'पानी का स्वाद' के लिए बांदा में फरवरी में प्रदान किया जाएगा।

चित्रा मुद्गल का सम्मान

'व्यास सम्मान' से सम्मानित प्रथम महिला साहित्यकार **चित्रा मुद्गल** ने अपने सम्मान समारोह में कहा—रचनाकारों का समाज से सीधा संवाद कटता जा रहा है इसी के कारण साहित्य में अच्छी कृतियों का अभाव हो गया है। रचनाकारों को चाहिए कि वे समाज के अन्तिम व्यक्ति, शोषित और गरीब के पास जाकर उसकी कठिनाईयों को गहराई से महसूस करें तभी एक अच्छी कृति का निर्माण हो सकता है। ये विचार हिन्दी भवन के सभागार में प्रतिष्ठित 'व्यास सम्मान' से सम्मानित कथाकार चित्रा मुद्गल ने व्यक्त किए।

सामयिक प्रकाशन द्वारा आयोजित अपने सम्मान समारोह में उन्होंने आगे कहा कि हमारी संस्कृति और संस्कार में **दलाल संस्कृति** का प्रवेश हो गया है जिससे समाज का अन्तिम व्यक्ति ग्रामीण, शोषित और गरीब लगातार ठगा जा रहा है। उन्होंने कहा कि 'आवां' लिखने के लिए उन्हें लगभग 6-7 वर्ष का समय लगा। इस अवसर पर उन्होंने अपने नये आने वाले उपन्यास 'एक काली एक सफेद' के कुछ अंश भी पढ़कर सुनाए।

श्याम विद्यार्थी को साहित्य सम्मान

जबलपुर की साहित्यिक, सांस्कृतिक संस्था 'अभियान' ने साहित्य मण्डल श्रीनाथ द्वारा के सभागार में **श्याम विद्यार्थी** को उनके कविता संग्रह 'आस्था के स्वर' पर 14 सितम्बर 2004 को रमेशप्रसाद वर्मा स्मृति भूषण से सम्मानित किया। साहित्यकार श्री नरेन्द्र कोहली ने श्री विद्यार्थी को नर्मदा दिव्य अलंकरण प्रदान किया।

अक्षरधाम, कैथल, हरियाणा ने लुधियाना में 27 सितम्बर 2004 को श्री विद्यार्थी को 'अक्षर विभूषण' सम्मानोपाधि से अलंकृत किया।

साहित्य शिल्पियों का सम्मान

मध्यप्रदेश लेखक संघ (अध्यक्ष श्री बटुक चतुर्वेदी) ने मध्यप्रदेश के 13 साहित्य शिल्पियों को विभिन्न साहित्यकारों की स्मृति में सम्मानित किया।

अक्षर आदित्य सम्मान—डॉ० सुशीला कपूर (भोपाल), मंगल मेहता (नीमच), कांतिलाल ठाकरे (इन्दौर), मेहरुन्निसा परवेज (भोपाल)। **कुंजनबाई चौकसे स्मृति सम्मान**—गोविन्द मिश्र (भोपाल)। **पुष्कर जोशी स्मृति सम्मान**—प्रभुदयाल मिश्रा (भोपाल)। **देवकीनन्दन माहेश्वरी स्मृति सम्मान**—महेश जोशी (खरगान)। **काशीबाई मेहता स्मृति लेखिका सम्मान**—छाया गोयल (इन्दौर)। **कस्तूरी देवी चतुर्वेदी लोकभाषा लेखिका सम्मान**—डॉ० शारदा सिंह (सागर)। **माणिक वर्मा व्यंग्य सम्मान**—गुरुसक्सेना 'सांड नरसिंहपुरी' (नरसिंहपुर)। **चन्द्रप्रकाश जायसवाल बाल साहित्य सम्मान**—हरीश दुबे (महेश्वर), **पार्वतीदेवी मेहता स्मृति अहिन्दीभाषी हिन्दी सेवी सम्मान**—कुंदा जोगलेकर (ग्वालियर)। **मालती बसन्त नव लेखिका सम्मान**—राजकुमारी हटकर (भोपाल)।

आचार्य हेमचन्द्र सूरी पुरस्कार

पिछले दिनों भारत अन्तराष्ट्रीय केन्द्र दिल्ली में नवम् आचार्य हेमचन्द्र सूरी पुरस्कार सुप्रसिद्ध न्यायविद डॉ० लक्ष्मीमल सिंघवी ने जर्मन विद्वान् **विलेम बोल्ली** को प्रदान किया। यह पुरस्कार उनके जीवनपर्यन्त प्राकृत भाषा के अध्ययन और अवदानस्वरूप दिया गया। फेडरल रिपब्लिक जर्मनी के राजदूत श्री हेमो रिचर ने समारोह की अध्यक्षता की। इस अवसर पर हिन्दी साहित्यकार डॉ० नामवर सिंह भी उपस्थित थे।

मुरारीलाल डालमिया सम्मानित

राजश्री स्मृति न्यास साहित्यिक संस्था कोलकाता के तत्वावधान में सुपरिचित काव्य-शिल्पी **श्री मुरारीलाल डालमिया** को पश्चिम बंगला अकादमी के जीवनानन्द सभाकक्ष में 'राजश्री स्मृति सम्मान' से विभूषित किया गया।

प्रो० कल्याणमल लोढ़ा ने मुरारीलालजी की कविताओं में जीवन की खोज बताई जो, उन्हें विविधता की ओर ले जाती है। उनके जीवन का लक्ष्य सतत संघर्षशील रहा है जिसने उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है।

डॉ० ममता कालिया ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कवि को वर्तमान से जुड़कर अपनी प्रतिभा को उजागर करने का सुझाव दिया। आचार्य प्रवर प्रो० कल्याणमल लोढ़ा थे मुख्य अतिथि और 'छपते छपते' के सम्पादक श्री विश्वम्भर नेवर मुख्य वक्ता।

कमलेश्वर को माणिक वर्मा पुरस्कार

मध्यप्रदेश, हरदा के अखिल भारतीय कस्तूरी संस्थान ने वर्ष 2004-05 का माणिक वर्मा पुरस्कार सुप्रसिद्ध कथाकार **कमलेश्वर** को 24 दिसम्बर 2004 को भोपाल में आयोजित एक गरिमामय समारोह में प्रदान किया। पुरस्कार स्वरूप 51 हजार रुपये की नगद राशि, शाल, श्रीफल एवं स्मृति चिह्न प्रदान किया। माणिक वर्मा सांस्कृतिक एवं पारमार्थिक न्यास के अध्यक्ष श्री नीरज वर्मा के अनुसार यह पुरस्कार हरदा निवासी तथा अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त कवि श्री माणिक वर्मा की स्मृति में स्थापित किया गया है।

डॉ० बेदी तथा डॉ० चमनलाल को शिरोमणि साहित्यकार पुरस्कार

हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक गुरूनानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर हिन्दी विभाग के वरिष्ठ प्रोफेसर एवं डीन **डॉ० हरमहेन्द्र सिंह बेदी** तथा पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष **डॉ० चमनलाल** को पंजाब सरकार की ओर से एक-एक लाख रुपये के पुरस्कार 3 दिसम्बर 2004 को पटियाला में राज्य स्तरीय समारोह में प्रदान किये गये। डॉ० बेदी 30 पुस्तकों के लेखक हैं। इससे पूर्व वह राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित भी हो चुके हैं। आजकल भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार भी हैं। पंजाब के हिन्दी साहित्य की उन्होंने राष्ट्रीय पहचान बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान डाला है।

डॉ० हरमहेन्द्र सिंह बेदी

हिन्दी, पंजाबी और अंग्रेजी में कुल 28 पुस्तकों के लेखक **डॉ० चमनलाल** ने हिन्दी में 17, पंजाबी में 7 और अंग्रेजी में 4 पुस्तकों की रचना की है। उन्हें इससे पूर्व दो प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुके हैं।

हिन्दी साहित्य शिरोमणि पुरस्कार

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि-समीक्षक, संत साहित्य मर्मज्ञ **डॉ० बलदेव वंशी** को भाषा-विभाग, पंजाब (पंजाब सरकार) ने एक विशेष आयोजन में हिन्दी साहित्य शिरोमणि पुरस्कार देकर सम्मानित किया है। इस बार भाषा विभाग ने पिछले चार वर्षों के सम्मान पुरस्कार प्रदान किये हैं। इसी समारोह में सुप्रसिद्ध आलोचक डॉ० रमेश कुंतल मेघ (2001), डॉ० हरमहेन्द्र सिंह बेदी (2002), डॉ० चमनलाल (2003), डॉ० बलदेव वंशी (2004) को ये सम्मान पुरस्कार दिये गये। पुरस्कारस्वरूप एक लाख रुपये,

शाल व प्रतीक-चिह्न भेंट किये गये। डॉ० वंशी को दिल्ली की एक अन्य संस्था 'काव्य शोध संस्थान' ने नवम्बर, 2004 को 'संत साहित्यश्री' की उपाधि से अलंकृत किया है।

पत्रकार ढोबले को महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी पुरस्कार

वरिष्ठ पत्रकार **गंगाधर ढोबले** एवं उनकी पत्नी **सुषमा ढोबले** को महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी का काका कालेलकर पुरस्कार दिया जायगा। पुरस्कार स्वरूप उन्हें 25 हजार रुपये, शाल, श्रीफल व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जायेगा।

ढोबले दम्पत्ति की कृति 'मरुभूमि से देवभूमि तक' शीर्षक यात्रा वर्णन रचना पर यह पुरस्कार दिया गया है। यह पुस्तक दम्पत्ति के जैसलमेर से केरल. तमिलनाडु तक की सड़क यात्रा के अनुभवों पर आधारित है। लेखकद्वय की दूसरी पुस्तक 'लोहित तीरे' पिछले माह ही प्रकाशित हुई है जो पूर्वोत्तर राज्यों की सड़क यात्रा का वृत्तांत है।

वर्ष 2004 के साहित्य अकादमी पुरस्कार

हिन्दी के प्रख्यात कवि **वीरेन डंगवाल** को उनके कविता संग्रह '**दुष्चक्र में स्रष्टा**' के लिए वर्ष 2004 का साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया जाएगा। पुरस्कार पाने वाले अन्य कवियों में **असमिया** के हीरेन्द्रनाथ दत्त, **कश्मीरी** के गुलाम नबी फिराक, **मैथिली** के चन्द्रभानु सिंह, **मणिपुरी** के वीरेन्द्र जीत नाओरेम, **नेपाली** के जस योंजन प्यासी और **तमिल** के तमिलनबन के नाम शामिल हैं। अकादमी के अध्यक्ष गोपीचंद नारंग की अध्यक्षता में हुए कार्यकारी मण्डल की अहम बैठक के बाद इन नामों की घोषणा की। अकादमी ने कुल 22 रचनाकारों को यह पुरस्कार देने का फैसला किया है।

हिन्दी के लिए वर्ष 2004 के पुरस्कार के चयन के लिए 13 साहित्यकार व उनकी रचनाओं के नाम प्रस्तावित थे। इनमें मैत्रेयी पुष्पा, काशीनाथ सिंह, चित्रा मुद्गल, राजेन्द्र यादव, मिथिलेश्वर व मनोहर श्याम जोशी के नाम भी थे। 'दुष्चक्र में स्रष्टा' को अकादमी पुरस्कार के लिए चुना। इसी तरह हर भाषा में अकादमी पुरस्कार के चयन के लिए तीन सदस्यीय समिति का गठन किया गया था। अकादमी के सचिव के सच्चिदानन्द के अनुसार यह पुरस्कार **16 फरवरी 2005** को राजधानी में आयोजित भव्य समारोह में दिए जाएँगे। पुरस्कार के रूप में हर साहित्यकार को एक ताम्रपत्र व 50 हजार रुपये दिए जाएँगे। **अंग्रेजी** लेखक उपमन्यु चटर्जी को उनके उपन्यास 'द मैमरीज ऑफ द वेलफेयर स्टेट' के लिए यह पुरस्कार दिया जाएगा। **कन्नड़** उपन्यासकार गीता नागभूषण को 'बदकु', **मराठी** उपन्यासकार सदानंद देशमुख को 'बारोमास', **राजस्थानी** उपन्यासकार नंद भारद्वाज को 'साम्ही खुलतो मारग' व **तेलुगु** उपन्यासकार के नवीन को 'कालरेखरू' के लिए अकादमी पुरस्कार दिया जाएगा। **संस्कृत** के कलानाथ शास्त्री को कथा साहित्य 'आख्यान वल्लरी' के लिए और **मलयालम** के पॉल जकारिया **उर्दू** के सलाम बिन रज्जाक व **कोंकणी** लेखक जयंती नायक को उनके कहानी संग्रह के लिए पुरस्कृत किया जाएगा। **बांग्ला** लेखक सुधीर चक्रवर्ती को उनके निबन्ध संग्रह 'बाउल फकीर कथा', **डोगरी** लेखक शिवनाथ को 'चेतें दी चितकबरी', **उड़िया** के प्रफुल्ल कुमार मोहंती को 'भारतीय संस्कृति ओ भगवद्गीता' के लिए अकादमी पुरस्कार के लिए चुना गया है। **पंजाबी** समालोचक सतिंदर सिंह नूर (कविता दी भूमिका), सिंधी समालोचक सतीश रोहरा (कविता खाँ कविता ताई) और **गुजराती** लेखक अमृतलाल वेगड़ को उनके यात्रा वृत्तांत 'सौन्दर्यनी नदी नर्मदा' के लिए अकादमी पुरस्कार दिया जाएगा।

डॉ० विवेकी राय को 'सेतु सम्मान'

विश्व भोजपुरी सम्मेलन की ओर से भोजपुरी साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए प्रतिवर्ष दिया जानेवाला 'सेतु सम्मान' इस वर्ष प्रख्यात कथाकार **डॉ० विवेकी राय** को भोजपुरी साहित्य में समग्र अवदान के लिए 28 दिसम्बर 04 के नागपुर के देशपाण्डे हाल में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री विलासराव देशमुख द्वारा दिया गया।

ज्ञातव्य है कि 'सेतु सम्मान' भोजपुरी साहित्य के क्षेत्र में दिया जाने वाला विश्व का सर्वोच्च सम्मान है। सम्मान के अन्तर्गत 25,000 रुपये की सम्मान राशि, शाल, प्रशस्ति-पत्र, नारियल और चाँदी का स्मृति-चिह्न प्रदान किया जाता है। डॉ० विवेकी राय के पूर्व यह सम्मान सर्वश्री धरीक्षण मिश्र, गणेश चौबे, डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय, मोती बी०ए०, चन्द्रशेखर मिश्र, कमलाप्रसाद मिश्र और रामजियावनदास 'बावला' को मिल चुका है।

21 साहित्यिक पुरस्कारों हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित

(पंचम आयोजन)

छत्तीसगढ़ राज्य की बहुआयामी संस्था सृजन-सम्मान द्वारा साहित्य की विभिन्न विधाओं में उल्लेखनीय योगदान हेतु विद्वान रचनाकारों से पंचम अ०भा० वार्षिक पुरस्कार-2004 हेतु रचनाकारों से प्रविष्टियाँ मार्च 2005 तक आमंत्रित किये गये हैं।

विवरण हेतु श्री जयप्रकाश मानस, राज्य समन्वयक, सृजन-सम्मान, एफ-3, आवासीय परिसर, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, पेंशनवाड़ा, रायपुर (छत्तीसगढ़)-492 001 से सम्पर्क करें।

कथन

भाषा संस्कृति का अंग होती है। विश्व में वही संस्कृतियाँ जीवित रह सकी हैं, जिन्होंने अपनी भाषा को जीवित रखा। भाषा समाज विज्ञान की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होती है, क्योंकि समाज में लोगों के बीच सम्बन्ध स्थापित करने के लिये भाषा ही मुख्य आधार होती है।

आज सूचना प्रौद्योगिकी के युग में राष्ट्रवाद की अवधारणा मिट रही है। ऐसी स्थिति में हमें सांस्कृतिक पहचान बनाये रखने के लिये भाषाओं को संरक्षित रखना होगा। **—सुरेन्द्र सिंह,** *कुलपति*
महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ

पाकिस्तान सरकार जो इतिहास वह स्कूलों और कालेजों में पढ़ा रही है वह पक्षपातपूर्ण है और उसका प्रारम्भ भारत में मुस्लिम शासन के उद्भव से ही होता है। मोहनजोदड़ो और तक्षशिला के बारे में उसकी सोच क्या है? उनकी कहीं चर्चा तक उस इतिहास में नहीं होती, क्योंकि उनका सम्बन्ध हिन्दू धर्म से हे। इस तरह से पूर्वाग्रह का बीजारोपण किया जाता है। इतिहास की पुस्तकों का संशोधन यह जाँचने के लिए एक पैमाना होगा कि राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ जिन्ना की विरासत सैक्युलरवाद को बढ़ाने के प्रति कितने गम्भीर हैं?

—कुलदीप नैय्यर

भारतीय नेता दुनिया में 'सबसे भ्रष्ट'

भारतीय राजनीतिक पार्टियाँ व नेता भ्रष्टाचार में आकंठ डूबे हुए हैं। दुनिया में भारतीय राजनीतिक दलों और नेताओं की छवि अत्यन्त घटिया है। सर्वेक्षण में उन्हें 'सबसे भ्रष्ट' बताया गया है।

बर्लिन आधारित गैर सरकारी संगठन '**ट्रांसपेरेंसी इण्टरनेशनल**' (टीआई) ने दुनिया भर की राजनीतिक पार्टियों की छवि के बारे में आम सर्वेक्षण किया।

राजनीतिक दलों और नेताओं के भ्रष्ट होने के मामले में इक्वाडोर अव्वल रहा। इसके बाद अर्जेण्टीना, ब्राजील, पेरू और भारत का नम्बर था। 'टीआई' की सर्वेक्षण रिपोर्ट में साफ-साफ कहा गया है कि—''भ्रष्ट आचरण इन देशों के राजनेताओं की रग-रग में समा चुका है।'' यही वजह है कि इन देशों की राजनीतिक पार्टियों का मूल उद्देश्य 'भ्रष्टाचार' हो गया है। आज के जमाने में कोई काम बिना रिश्वत के होने से रहा।

क्राइम सिंडीकेट

इस देश में प्रतिभाओं की कहीं कोई कमी नहीं है। संसाधनों का भी विशाल भण्डार है, किन्तु संकट यह है कि हमारे पास इन क्षमताओं को उजागर करने का भविष्य का चेहरा बाँचने की मशीनरी कहाँ है? देश का सारा विकास तो राजनेता, अपराधी और अफसरशाही के सिंडीकेट की भेंट चढ़ चुका है। इस क्राइम सिंडीकेट के आगे सारे सिद्धान्त निष्फल हो जाते हैं। सारी योग्यता धरी की धरी रह जाती है। **—प्रो० ए०के० सिनहा**
प्रोचांसलर, भागलपुर विश्वविद्यालय

भारत में दिनों दिन बढ़ता भ्रष्टाचार और कथनी व करनी का अन्तर देश की प्रगति में बाधक है। हममें विश्व का नेता बनने की सभी खूबियाँ हैं पर दुनिया की श्रेष्ठ एजेन्सियाँ भारत को भ्रष्टतम देशों की सूची में काफी ऊपर रखेगी तो हम किस मुँह से दुनिया के नेता कहला सकते हैं? **—डॉ० कर्ण सिंह,**
पूर्व नरेश, जम्मू कश्मीर

भाषा की विविधता और विखण्डता के बावजूद कविता और कहानी का महत्त्व हमेशा विद्यमान रहा। अतीत में जब राष्ट्र विदेशी आक्रमण से आक्रान्त रहा, इस दौरान भी रचनाकारों ने अपनी साहित्य सर्जना के माध्यम से समाज का दिशा-निर्देशन किया। वर्तमान में समाज गुणपरक नहीं रह गया है, आज सब कुछ राजनेताओं की कृपा से प्राप्त किया जा सकता है।

—प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र
कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय

यत्र-तत्र-सर्वत्र

विरासत को लेकर भी विवाद अदालत पहुँचा

प्रख्यात साहित्यकार तथा लब्धप्रतिष्ठ व्यंग्यकार स्व० हरिशंकर परसाई की वसीयत का विवाद अदालत तक पहुँच गया है। स्व० परसाई की बिलासपुर में रह रही भतीजी श्रीमती अमिता वर्मा ने बिलासपुर के जिला सत्र न्यायालय में वाद दायर कर कहा है कि उनके भांजे प्रकाश दुबे के नाम की वसीयत संदिग्ध है। परसाई की रचनाओं की रायल्टी पर परिवार के अन्य सदस्यों का अधिकार होना चाहिए। उन्होंने स्व० परसाई की सम्पत्ति तथा रायल्टी में हिस्से पाने पर अपना भी अधिकार जमाया है। उल्लेखनीय है कि अविवाहित रहे हरिशंकर परसाई जबलपुर में आजीवन अपनी छोटी बहन श्रीमती सीता दुबे के साथ ही रहे। 10 अगस्त 1995 को परसाईजी का निधान हो गया था। उनकी मौत के बाद अन्तिम संस्कार छोटे भाई गौरीशंकर ने किया था। परसाई की मौत के कुछ दिनों बाद एक वसीयत पेश की गई जिसमें परसाई ने अपनी दो बैंकों में जमा 81 हजार रुपए तथा समस्त रचनाओं तथा पुस्तकों का सर्वाधिकार अपने भांजे प्रकाशचंद्र दुबे के नाम किया। श्री दुबे परसाईजी की बहन सीता दुबे के पुत्र हैं। परसाईजी की वसीयत के गवाह के तौर पर डॉ० रामशंकर मिश्र, आर०सी० तिवारी तथा श्रीमती सीता दुबे के हस्ताक्षर हैं।

भारत में 3372 भाषाएँ

केन्द्रीय संस्कृति मंत्री जयपाल रेड्डी ने राज्यसभा में बताया कि 1991 की जनगणना के अनुसार भारत में कुल 3372 भाषाएँ हैं तथा 10,000 से अधिक लोगों द्वारा बोली जानेवाली भाषाओं की संख्या 216 है।

सूर की कविता संगीत सागर है

साहित्य अकादेमी, सहर और इण्डिया इण्टरनेशनल सेंटर द्वारा 1 दिसम्बर, 2004 को सेंटर सभागार में अपनी कार्यक्रम शृंखला 'सूर साहित्य' के अन्तर्गत सूर-गायन गन्धर्व महाविद्यालय के ओमप्रकाश राय एवं साथियों द्वारा प्रस्तुत किया गया। सूर्य के काव्य पर विचार करते हुए वरिष्ठ आलोचक **मैनेजर पांडेय** ने कहा कि **'सूर सागर काव्य' सागर तो है ही संगीत सागर भी है।** सूरदास की कविता में गायन, वादन और नृत्य संगीत के तीनों पक्ष मौजूद हैं, उनके पद राग-रागनियों से बँधे हैं। सूर के काव्य में संगीत की दोनों परम्पराएँ मौजूद हैं। एक ओर ख्याल गायकी है तो दूसरी ओर ध्रुपद गायकी के पद पाये जाते हैं। शास्त्रीय संगीत के इन दोनों रूपों के अलावा लोकगीत का विस्तार भी सूर की कविता में है। सोहर, बधाई, होरी, गारी, धमार ये सारे लोकगीतों के विभिन्न सूर-सागर में हैं। मैंने खुद गिना है कि बत्तीस (32) तरह के वाद्य यंत्रों का उन्होंने उल्लेख किया है। नृत्य के अनेक रूप भी सूरसागर में हैं। 'अब मैं नाच्यौ बहुत गोपाल' में कत्थक नृत्य का रूपक मौजूद है। रास का सामूहिक नृत्य भी मिलता है।

सूर का साहित्य अंतरंग रूप से जुड़ा है जिसका आधार प्रेम है। प्रेम की सारी लीला रूप और नाद से चलती है। सूर के काव्य में प्रेम की विविधता, असीमता है। संगीत प्रेम का पोषक होता है। प्रत्येक कला की यह विशेषता होती है कि वह सरहद को नहीं मानती। संगीत ऐसी कला है जो हर तरह को बन्धन से मुक्त करती है। गोपियाँ कहती हैं कि कृष्ण की मुरली सुनकर हम किसी भी बन्धन में नहीं बँध सकतीं। उन्होंने कहा कि आज सूर के गायन को सुनकर हम अपनी जड़ता और सीमाओं से मुक्त होंगे।

कार्यक्रम के समापन पर अकादेमी के सचिव प्रो०के० सच्चिदानंदन ने ओमप्रकाश राय और साथियों को पुष्प गुच्छों से सम्मानित किया। संचालन अकादेमी के उपसचिव डॉ० ब्रजेन्द्र त्रिपाठी ने किया।

—साधना अग्रवाल

बिहार : क्या था, क्या हो गया ?

पतंजलि (दूसरी सदी ई०पू०) ने यहीं योगसूत्र खोजे। चाणक्य (चौथी शताब्दी ई०पू०) ने यहीं विश्व प्रसिद्ध अर्थशास्त्र रचा। यह बुद्ध और महावीर का तप क्षेत्र रहा। भारत के पहले साम्राज्य की स्थापना (छठी सदी ई०पूर्व) यहीं बिम्बसार ने की। अपने समय में दुनिया का सबसे बड़ा साम्राज्य भी अशोक ने यहीं स्थापित (तीसरी सदी ई०पूर्व) किया। दोनों की राजधानी पाटलिपुत्र थी। राष्ट्रकवि डॉ० रामधारी सिंह ने यहीं 'भारतीय संस्कृति के चार अध्याय' खोजे। बाबा नागार्जुन और 'मैला आँचल' वाले फणीश्वरनाथ रेणु यहीं के थे। भारत की संविधान सभा के अध्यक्ष और प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसाद भी बिहार के थे। जे०पी० के सम्पूर्ण क्रान्ति आन्दोलन (1975-1977) का गोमुख भी बिहार ही बना। जो बिहार भारतीय दर्शन, साहित्य, काव्य और संस्कृति का स्वाभिमानी केन्द्र था वह आज प्रत्येक गलत काम का प्रतीक बन गया है।

—हृदयनारायण दीक्षित

छत्तीसगढ़ के ज्ञानोदय वाचनालयों के लिए करोड़ों की अश्लील पुस्तकों की खरीद

'भारतीय वाङ्मय' के नवम्बर अंक का सम्पादकीय था—'पुस्तकों की सरकारी खरीद का गोरख धंधा' जिसमें छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश सरकार द्वारा पुस्तक खरीद में व्याप्त भ्रष्टाचार की चर्चा की गयी थी। 'आउटलुक' साप्ताहिक के 20 दिसम्बर 2004 के अंक में छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र में किस प्रकार सरकारी विभागों द्वारा अश्लील पुस्तकें खरीदी गयीं, प्रकाशित रपट चौंकाने वाली ही नहीं, स्तब्ध करने वाली हैं। उसके कुछ अंश 'आउटलुक' से साभार उद्धृत किये जा रहे हैं।

''त्रिया-चरित्र, सेक्स अपराध, सेक्सी शायरी, जीजा-साली की रोमांटिक शायरी, सेक्स गाइड, पति पत्नी से क्या चाहता है, सुहागरात कैसे मनाएँ—ये सारे नाम किसी 'ए' सर्टिफिकेट फिल्मों के नहीं हैं बल्कि उन अश्लील किताबों के हैं जो छत्तीसगढ़ की 945 ग्राम पंचायतों में मौजूद राजीव गाँधी ज्ञानोदय वाचनालयों (अब स्वामी आत्मानंद वाचनालय) में ग्रामीणों को पढ़ाई जा रही हैं। पूर्ववर्ती जोगी सरकार ने ग्रामीण साक्षरता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राज्य गठन के साथ ही ग्राम पंचायतों में राजीव गाँधी ज्ञानोदय वाचनालयों की स्थापना की थी। प्रत्येक ग्राम पंचायत को इस वाचनालय के संचालन के लिए साढ़े दस हजार रुपये का बजट प्रावधान है। इसमें साहित्यिक, सांस्कृतिक और सामान्य ज्ञान की किताबों के अलावा एक गोदरेज की आलमारी और फर्नीचर खरीदना होता है।

''लगभग साढ़े-नौ करोड़ के बजट वाले इन वाचनालयों में खरीद के नाम से चल रहे गोरखधंधे में सप्लायर, अफसरों और छुटभैये नेताओं की मिलीभगत से सरकार को करोड़ों का नुकसान हो चुका है। राजीव गांधी शिक्षा मिशन के अन्तर्गत चल रहे सर्वशिक्षा अभियान में भी किताब खरीद घोटाले पिछले साल सामने आए, जाँच भी हुई, लेकिन नतीजा सिफर रहा।

भाजपा सरकार ने राजीव गांधी वाचनालय का नाम बदलकर अब स्वामी आत्मानंद वाचनालय कर दिया है और नए सिरे से इन वाचनालयों में खरीद के लिए राज्य स्तर की समितियाँ गठिन की हैं। इन सारी गड़बड़ियों के चलते ये समितियाँ यह तय नहीं कर पा रही हैं कि खरीद के मापदण्ड क्या हों। इन समितियों में भाजपा के वरिष्ठ पदाधिकारी तो हैं लेकिन कोई साहित्यकार नहीं।

''वर्ष 2003-04 के लिए राजीव गांधी शिक्षा मिशन के तहत चल रहे सर्वशिक्षा अभियान में भी 4 करोड़ रुपये की किताबों की खरीद में 1 करोड़ 70 लाख रुपये के घोटाले की शिकायत तत्कालीन शिक्षा मंत्री विक्रम उसेंडी से हुई थी। उस शिकायत के मुताबिक 5 रुपये की लागत वाली किताब 115 रुपये में खरीदी गई और 2 करोड़ रुपये का भुगतान भी कर दिया गया। उसेंडी ने जब इस खरीद की जाँच के आदेश दिए तो जाँच को दबाने की कोशिश हुई। कई बड़े प्रकाशकों का लाखों रुपये का भुगतान इसलिए रोका गया कि मामले की जाँच चल रही थी लेकिन इसी बीच राजीव गांधी शिक्षा मिशन के तत्कालीन संयुक्त संचालक प्रमोद सिंह का कैडर बदल गया और वह मध्यप्रदेश चले गए।'' मध्यप्रदेश में भी पुस्तक खरीद में उन्होंने लगभग वही प्रक्रिया अपनायी, जिसके कारण मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय को प्रकाशकों के भुगतान रोकने का आदेश देना पड़ा।

साहित्य अकादमी की स्वर्ण जयन्ती पर डाक टिकट

साहित्य अकादमी की स्थापना के पचास वर्ष पूर्ण होने पर संचार राज्यमंत्री शकील अहमद ने 21 दिसम्बर 2004 को समारोह में पाँच रुपये का डाक टिकट जारी करते हुए, संस्कृति मंत्री एस० जयपाल रेड्डी को भेंट किया। पिछले दिनों प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने विज्ञान भवन में अकादमी के स्वर्ण जयन्ती समारोह का औपचारिक उद्घाटन किया था।

इस अवसर पर जयपाल रेड्डी ने साहित्य अकादमी की पिछले पचास वर्षों की उपलब्धियों का जिक्र करते हुए कहा कि—''अकादमी ने साहित्य के

विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हमारी वाचिक और जनजातीय भाषाओं को संरक्षित एवं विकसित किया है। अकादमी ने अपने पचास साल में सफर के दौरान 4300 पुस्तकों को 22 भारतीय भाषाओं में प्रकाशित किया है। कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर और उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद अपनी कृतियों के लिए जाने जाते हैं। आज के दौर में लेखकों एवं साहित्यकारों के लिए मुंशी प्रेमचंद प्रेरणास्रोत हैं। उन्होंने प्रेमचंद की 125वीं जयन्ती पर होने वाले कार्यक्रम को संस्कृति मंत्रालय की ओर से सहयोग देने की भी घोषणा की।''

कार्यक्रम में केन्द्रीय संचार व सूचना एवं प्रौद्योगिकी राज्यमंत्री डॉ० शकील अहमद ने कहा कि साहित्य भावनाओं व संस्कृति को जोड़ने वाली महत्त्वपूर्ण कड़ी है। आज सूचना व क्रान्ति के दौर में भी पुस्तकों के योगदान को नकारा नहीं जा सकता। वर्तमान समय में साहित्यिक पुस्तकों की माँग बढ़ी है। उन्होंने कहा कि भाषाओं और समुदायों को करीब लाने में अकादमी का महत्त्वपूण्र योगदान रहा है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अकादमी के अध्यक्ष प्रो० गोपीचंद नारंग ने कहा कि यद्यपि जिन्दगी में अकेले चलने का ही महत्त्व है लेकिन **साहित्य अकादमी** में हम अकेले नहीं साथ मिलकर चलते हैं क्योंकि यह **लेखकों का कारवां है।**

अभी शेष है : महीप सिंह

साहित्यिक संस्था 'संवाद' की ओर से दिल्ली के प्रकाशन विभाग के सभागार में वरिष्ठ लेखक **महीप सिंह** के सद्य: प्रकाशित उपन्यास '**अभी शेष है**', पर विचार-गोष्ठी का आयोजन हुआ।

उपन्यास पर सुप्रसिद्ध आलोचक डॉ० हरदयाल, सुशील डॉ० कमलेश सचदेव, डॉ० सुनीता जैन, सुश्री संतोष गोयल, श्री सुरेन्द्र तिवारी, डॉ० गुरचरण सिंह और डॉ० पवन माथुर ने चर्चा में भाग लिया।

अध्यक्षीय भाषण में कवि नाटककार-आलोचक डॉ० नरेन्द्र मोहन ने 'अभी शेष है' को तीन पीढ़ियों का दर्द समेटने वाला उपन्यास माना। विभाजन-परवर्ती तीन पीढ़ियों को लेकर विभाजन की त्रासदी का चित्रण पहली बार इस उपन्यास में हुआ। साक्षात्कार और अभिव्यक्ति के द्वन्द्व को इस उपन्यास के सन्दर्भ में घटित करते हुए लेखक हाथ से फिसलते हुए यथार्थ को कहने की कोशिश करता है—यह इसकी निशिष्टता है।

गोष्ठी का संचालन डॉ० मीरा सीकरी ने किया। इस अवसर पर डॉ० रामदरश मिश्र, सिम्मी हर्षिता, कुसुम अंसल, शामा, राजिन्दर कौर, डॉ० कृपाशंकर सिंह, जगन सिंह, मंजु गुप्ता, रेखा व्यास, रामजी यादव आदि अनेक साहित्यकार उपस्थित थे।

यूजीसी की 'एरनेट' सेवा से जुड़ा विद्यापीठ

महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी यूजीसी की 'एरनेट' सेवा से जुड़ गया है। यह उपलब्धि हासिल करने वाला वह बीएचयू के बाद दूसरा विश्वविद्यालय बन गया है। एरनेट के माध्यम से विश्वविद्यालय शिक्षकों और छात्रों को काफी लाभ होगा। वे दूसरे विश्वविद्यालय में उपलब्ध विभिन्न प्रकार की शोध सामग्रियों का लाभ अपने विश्वविद्यालय में ही बैठकर उठा सकते हैं। इसके अलावा तमाम तरह की अन्य शैक्षणिक सामग्रियाँ' आनलाइन' उपलब्ध हो जाएँगी।

राष्ट्रपति डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम द्वारा 'मंथन' का लोकार्पण

'मंथन साहित्य विशेषांक 2004' का लोकार्पण करते हुए राष्ट्रपति डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम, सोबत प्रधान, सम्पादक महेश अग्रवाल, अमृत पटेल, शांतिभाई ठक्कर और तेजस अग्रवाल।

राष्ट्रपति डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम, जो हृदय से साहित्यकार भी हैं, ने 'मंथन' की दसवीं वर्षगाँठ के अवसर पर प्रकाशित साहित्य विशेषांक का लोकार्पण करते हुए कहा कि यह हिन्दी की बहुत बड़ी सेवा है। एक ओर जहाँ बड़ी-बड़ी साहित्यिक पत्रिकाएँ बन्द हो रही हैं, वहीं 'मंथन' इस रूप में यह कमी काफी हद तक पूरी कर रहा है।

राजभवन में आयोजित कार्यक्रम में श्री कलाम ने कहा कि महाराष्ट्र में साहित्य के विकास की परम्परा रही है। मराठी के साथ-साथ हिन्दी साहित्य का विकास भी महाराष्ट्र के लोग चाहते हैं, यह अच्छी बात है।

लोकार्पण के समय 'मंथन' परिवार के सम्पादक महेश अग्रवाल, शांतिभाई ठक्कर, अमृत पटेल, तेजस अग्रवाल व अन्य गणमान्य हस्तियों सहित प्रिण्ट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से जुड़े काफी लोग भी उपस्थित थे।

सिन्धु लिपि के रहस्य की परतें खोलने का दावा

सिन्धु घाटी की खुदाई में योगदान दे चुके उन्नाव के पुरातत्वविद् डॉ० एसके शुक्ल ने सिन्धु लिपि और ऋग्वेद ऋचाओं में आश्चर्यजनक समानता खोजी है। सिन्धु लिपि में उन्होंने कई पुराणों के नाम खोजे हैं। उनका कहना है कि सिन्धु लिपि प्राकृत-संस्कृत के करीब है न कि द्रविण लिपि के। अब तक मान्यता रही है कि सिन्धु के लोग दाएँ से बाएँ लिखते थे जबकि इस पुराविद् का दावा है कि वे बाएँ से दाएँ लिखते थे। डॉ० शुक्ल राजस्थान के कालीबंगा जिले में सिन्धु सभ्यता की खुदाई में अध्येता के रूप में काम कर चुके हैं।

संसद का इतिहास

केन्द्रीय गृहमंत्री श्री शिवराज पाटिल ने दो खण्डों में 'संसद का इतिहास' पुस्तक का लोकार्पण 18 दिसम्बर 2004 को भारत अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र दिल्ली में पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री वसंत साठे, वरिष्ठ पत्रकार प्रभाष जोशी की उपस्थिति में किया।

यह ग्रन्थ लोकसभा के पूर्व मुख्य सचिव सुभाष कश्यप तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर वी०पी० गुप्ता के संयुक्त लेखन में प्रकाशित हुआ है। इस ग्रन्थ में विभिन्न स्तर पर संसदीय लोकतंत्र के विकास की गाथा प्रस्तुत की गयी है।

'आजादी की ओर बढ़ते कदम' का विमोचन

नेल्सन मंडेला की आत्मकथा के हिन्दी अनुवाद 'आजादी की ओर बढ़ते कदम' पुस्तक का राष्ट्रपति भवन में लोकार्पण करते राष्ट्रपति कलाम। साथ में हैं अनुवादक ओमप्रकाश शर्मा, प्रकाशक विकास रखेजा व अनु रखेजा

राष्ट्रपति डॉ० एपीजे अब्दुल कलाम ने कहा है कि नेल्सन मंडेला दक्षिण अफ्रीका के नहीं, बल्कि विश्व की महान विभूतियों में से एक हैं। श्री मंडेला की जीवन शैली महात्मा गाँधी से काफी मिलती-जुलती है। राष्ट्रपति डॉ० कलाम ने ये विचार नेल्सन मंडेला की आत्मकथा *लाग वाक टू फ्रीडम* के हिन्दी अनुवाद *आजादी की ओर बढ़ते कदम* के लोकार्पण समारोह में व्यक्त किए। मंजुल पब्लिशिंग हाउस, भोपाल ने इसे प्रकाशित किया है और इसका हिन्दी अनुवाद ओमप्रकाश शर्मा ने किया है। राष्ट्रपति डॉ० कलाम ने लोकार्पण समारोह में इसी वर्ष सितम्बर की अपनी दक्षिण अफ्रीका यात्रा का भी जिक्र किया। उन्होंने श्री मंडेला से कई मुलाकात सम्बन्धित अपने कई संस्मरण सुनाए। महामहिम ने रोबिन आईलैंड के बारे में भी कई रोचक बातें भी बताई।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल स्मृति व्याख्यान

''भारत विश्व का सर्वाधिक विश्व चेतस राष्ट्र है इसका कारण उसका राजनैतिक महाशक्ति होना या अपनी सभ्यता दृष्टि को लेकर एक विश्वविजयी साम्राज्यादी दर्प से परिचालित होना नहीं है। भारत इसलिए स्वभावत: विश्व चेतस है कि वह विश्व की सर्वाधिक आत्मचेतस् संस्कृति का अधिष्ठान है उसकी चेतना मानववादी से भी आगे बढ़कर चराचरवादी और ब्रह्माण्ड व्यापी चेतना है। विरुद्धों का सामंजस्य भारतीय संस्कृति का मूलाधार है यही उसकी धुरी है। इसी के फलस्वरूप वह विश्व में सर्वाधिक मत-मतान्तरों एवं जीवन पद्धतियों के विराट वैविध्य को अपने में समाहित कर सकने वाली सभ्यता का जनक बन सका।''

ये विचार पद्मश्री से अलंकृत हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि एवं आलोचक डॉ० रमेशचन्द्र शाह ने अखिल

भारतीय साहित्य परिषद् की भरतपुर ईकाई द्वारा 4 दिसम्बर 2004 को आयोजित आचार्य रामचन्द्र शुक्ल स्मृति व्याख्यान चतुर्थ के अवसर पर प्रकट किये।

डॉ० शाह ने महाकवि निराला की पंक्तियों को उद्धृत करते हुए कहा कि 'भारत के प्रभापूर्ण सांस्कृतिक सूर्य' की ही ऐसी विडम्बना है जिस पर अब केवल 'जड़ रवि खर दहता' है यह छवि निराला को ललकारती है। निराला के काव्यनायक तुलसीदास को तथा उनके माध्यम से भारत के जन-जन को ललकारती है कि ''होगा फिर से दुर्धर्ष समर जड़ का चेतन से निशिवासर''।

डॉ० शाह के व्याख्यान से पूर्व अखिल भारतीय साहित्य परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ० कृष्णचन्द्र गोस्वामी ने कहा कि आज जीवन के सभी क्षेत्र में भारत उपभोक्ता बनकर रह गया है। हम किसी भी क्षेत्र में वस्तुओं के आविष्कारक या विचार के द्रष्टा के रूप में नहीं जाने जाते। किसी भी जीवन्त राष्ट्र के लिए यह बड़ी लज्जास्पद स्थिति है। साहित्य के क्षेत्र में अपनी रचना परम्परा से एकदम भिन्न दृष्टि वाले पाश्चात्य विचारकों का अंधानुकरण अविचारित ढंग से हो रहा है। इस परिस्थिति से उबरने का एकमात्र मार्ग भारत को आत्मचेतस् बनाने के लिए प्रयास करना ही है।

भरतपुर के सुप्रसिद्ध महाकवि सोमनाथ के नाम से अखिल भारतीय साहित्य परिषद् भरतपुर इकाई ने इस वर्ष राष्ट्रीय स्तर का 'महाकवि सोमनाथ एकात्मता सम्मान' भी प्रारम्भ किया। इस वर्ष यह सम्मान दशाधिक मराठी कृतियों के अनुवादक और प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ० ओमशिवराज को प्रदान किया गया। डॉ० रमेशचन्द शाह ने सम्मानित साहित्यकार का माल्यार्पण, शाल, श्रीफल एवं प्रतीक चिह्न द्वारा अभिनन्दन किया। डॉ० गोस्वामी ने उनका परिचय कराते हुए कहा कि वे बहुभाषाविद् साहित्यकार हैं। मराठी रचनाओं के उनके द्वारा किये गये अनुवाद इतने सजीव और प्रभावपूर्ण हैं कि वह हिन्दी के पाठकों में ऐसे पढ़े गये हैं जैसे वह हिन्दी की ही मूल रचना हो।

इस अवसर पर डॉ० ओम शिवराज ने कहा कि साहित्य परिषद् ने मेरा यह जो सम्मान किया है वस्तुत: उस सरस्वती का सम्मान है जिसकी कृपा से मैंने यह सब किया। उन्होंने अपने उपन्यास 'महाभारत का सत्य' की चर्चा करते हुए कहा कि महाभारत का मूल नाम जय है इसलिए कहा गया जहाँ धर्म है वहीं जय है; किन्तु दुर्भाग्य कि आज धर्म निरपेक्षता के नारे से भारत को धर्म से हीन करने का प्रयास चल रहा है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं स्थानीय महारानी जया महा० के प्राचार्य प्रो० उमेश चतुर्वेदी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कि हमारी साहित्य परम्परा स्वभावत: आत्मचेतस् रही है। व्यास वाल्मीकि से लगाकर आधुनिक कालपर्यन्त इस आत्मचेतसता की प्रखरता को अनुभव किया जा सकता है 'आत्मानं विद्धि' यह हमारा जीवन मंत्र रहा है। जिस ज्ञान को हम दूसरों का मानते हैं वह हमारी ही खिड़कियों से बिखरे हुए प्रकाश का परावर्तित रूप है। इसलिए यह आवश्यक है कि हम अपनी धरोहर को पहचानें।

भोजपुरी को संवैधानिक दर्जा

दुनियाभर में बीस करोड़ लोगों द्वारा बोली जाने वाली और पूर्वी उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बिहार की जनभाषा भोजपुरी को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने की माँग पर सरकार ने जल्द ही फैसला करने का आश्वासन दिया है।

लोकसभा में विभिन्न राजनीतिक दलों ने दलगत राजनीति से ऊपर उठकर भोजपुरी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने की माँग की और सरकार ने इस पर जल्द निर्णय लेने का आश्वासन दिया। जनता दल (यू) के प्रभुनाथ सिंह ने माँग एक ध्यानाकर्षण प्रस्ताव के माध्यम से की। उन्होंने कहा कि यह देश में 16 करोड़ लोगों की भाषा है। इसके अलावा 17 बाहरी देशों के चार करोड़ लोगों को मिलाकर इसे बोलनेवालों की कुल संख्या बीस करोड़ है। अनेक विश्वविद्यालयों में यह पढ़ाई जाती है तथा दूरदर्शन व आकाशवाणी पर भी इसका प्रचार होता है। अत: इसे भी उस अनुसूची में जोड़ा जाए। राष्ट्रीय जनता दल के रघुनाथ झा, समाजवादी पार्टी के मोहन सिंह और भाजपा के सुशील कुमार मोदी ने भी इस माँग का समर्थन किया।

मीराबाई की स्मृति में पंचशती अध्ययन-गोष्ठी

राजस्थान की गौरव, मेवाड़ की मीरा के पाँच सौ वर्ष पूर्ण होने पर उनकी स्मृति में विद्वानों शोधकर्ताओं द्वारा राष्ट्रीय गोष्ठी का आयोजन 28 तथा 29 दिसम्बर को उदयपुर में किया गया। गोष्ठी का मुख्य विषय था—मीरा जीवन, समाज और काव्य। मध्ययुगीन राजस्थान की मीरा को स्मरण किया राजस्थान सरकार के देवस्थान विभाग तथा मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय ने। इस गोष्ठी में लगभग 80 विद्वानों ने भाग लिया। गोष्ठी में पढ़े गये शोध-पत्रों को प्रकाशित करने की योजना है।

पटना पुस्तक मेला

पुस्तक मेले में वर-वधुओं की तलाश

मेला हमारी सांस्कृतिक चेतना क प्रतीक है। समाज अपनी प्रगति, अपनी सांस्कृतिक चेतना, आर्थिक उपलब्धियों के लिए मेला सर्वोत्तम स्थान था। इसलिए धार्मिक मेला, पशु मेला, शिल्प मेला आदि के आयोजन प्राचीनकाल से होते आ रहे हैं। शिवरात्रि, नवरात्र, अयोध्या का रामजन्म मेला, सोनपुर का पशु मेला, ददरी का मेला आदि विश्वप्रख्यात हैं। इन मेलों में नयी से नयी चीजों की जानकारी, अनेक व्यक्तियों से सम्पर्क तथा मनोवांछित चीजें सहज सुलभ हो जाती हैं। सामाजिक जीवन में वर-सन्धान अत्यन्त कठिन कार्य है। अब आधुनिक युग में वर-वधू का चयन भी बड़ी समस्या है। अब तक बिहार के मधुबनी जिले का सरौठ मेला ऐसा है जहाँ लोग वर की तलाश सहज ढंग से कर लेते हैं। पर आधुनिकता की हवा इस मेले को लग गयी है। अब अधिकतर वर उस मेले में नहीं जाना चाहते। फलत: वर-वधू का चयन कठिन हो जा रहा है। इस दिशा में पुस्तक मेला ने बड़ी सम्मानजनक भूमिका निभायी है, जहाँ मेला देखने के साथ वर-वधू को देखने और चयन का काम भी हो जाता है, अन्य किसी को यह भनक भी नहीं होती कि कोई इस मेले में वर-वधू की तलाश भी कर कर रहा है। अभी हाल में दिसम्बर मास में पटना में लगा पुस्तक मेला जहाँ लोगों ने पुस्तकें खरीदीं वहीं लड़का और लड़की को देखा, एक ने दूसरे को देखा और वर-वधू के चयन की सम्मानित ढंग से प्रक्रिया पूरी हो गयी। पटना के 12वें पुस्तक मेला का जहाँ सांस्कृतिक महत्त्व है, लोगों को शिक्षित और प्रबुद्ध बनाने में पुस्तक मेला ने भूमिका निभायी वहीं युवक-युवतियों को सद्गृहस्थ जीवन प्रदान करने में सहयोग भी किया। वर और वधू दोनों पक्ष एक ओर किताब देखते रहे तो दूसरी ओर वर-वधू को भी छुपे आँखें निहारते रहे। अगर इस भीड़ में दोनों पक्षों में वार्ता भी हुए तो किसी को कोई संकोच का प्रश्न नहीं था। **पुस्तकों ने दो परिवारों को जोड़ने में जिस सहज ढंग से भूमिका निभायी, वस्तुत: यह हमारी सांस्कृतिक चेतना की ऐतिहासिक भूमिका है।**

कबाड़ी बाजार में प्रधानमंत्रियों को भेंट की गयी पुस्तकें

पुस्तक लोकार्पण समारोह अथवा अन्य अवसरों पर प्रधानमंत्री तथा अन्य प्रमुख व्यक्तियों को लेखकों तथा प्रकाशकों द्वारा भेंट की गई पुस्तकें प्राप्त करना हो तो दिल्ली के साप्ताहिक पुस्तक बाजार दरियागंज में जाइये। पुस्तकों के फुटपाथी बाजार में ऐसी पुस्तकें सरलता से मिल जायँगी। पूर्व प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी को भेंट की गयी पुस्तकें उपलब्ध हैं। पूर्व प्रधानमंत्री सर्वश्री विश्वनाथप्रताप सिंह, चन्द्रशेखर, राजीव गाँधी, पी०वी० नरसिंहा राव और देवगौड़ा को भेंट की गयी पुस्तकें भी उपलब्ध हैं।

अटलबिहारी वाजपेयी को 30 मई 2002 को टी०एच० चौधरी द्वारा भेंट की गयी पुस्तक 'अण्डर स्ट्रेन' दस रुपये में बिक गयी। ये पुस्तकें पहले कबाड़ी बाजार में तौलकर खरीदी जाती हैं, जिन्हें दरियागंज के फुटपाथी पुस्तक विक्रेता कबाड़ियों से दो-चार रुपये में खरीद लाते हैं और उन्हें पुस्तक प्रेमियों को उपलब्ध कराते हैं, ऐसा है विश्व पुस्तक नगर दिल्ली, जहाँ हर चीज़ मिलती है कबाड़ी बाज़ार में।

कर्नाटक की दूसरी भाषा तेलुगु

पूर्व केन्द्रीय मंत्री तथा पूर्व भाजपा अध्यक्ष एम० वेंकैया नायडू का आग्रह है कि तेलुगु को तमिलनाडु, कर्नाटक और उड़ीसा में दूसरी भाषा का स्थान दिया जाय ताकि बच्चों को स्कूल में मातृभाषा तेलुगु पढ़ाई जाय। उन्होंने कहा कि हमें अपनी भाषा और संस्कृति की विघटनकारी शक्तियों से रक्षा करनी चाहिए। आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक तथा तमिलनाडु के लोगों से अपील की कि हम शताब्दियों से एक हैं, हमें संकीर्ण मानसिकता से हटकर एक होकर संघटित होना चाहिए।

'बिन पानी सब सून' का लोकार्पण

'नवजीवन पाठशाला समिति, गोरखपुर' के तत्त्वावधान में डॉ० वेदप्रकाश पाण्डेय के 'विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी' से प्रकाशित ललित निबन्द संग्रह 'बिन पानी सब सून' का लोकार्पण

18 दिसम्बर, 2004 को गोरखपुर विश्वविद्यालय के 'मजीठिया भवन' में सम्पन्न हुआ।

पत्रकार

जनसमस्याओं से मुँह न मोड़ें : शेखावत

गत 11 दिसम्बर को वरिष्ठ पत्रकार संतोष भारतीय की दो पुस्तकों 'पत्रकारिता : नया दौर, नये प्रतिमान' तथा 'निशाने पर : समय, समाज और राजनीति' का लोकार्पण उपराष्ट्रपति भैरोसिंह शेखावत के अपने निवास पर हुआ। राधाकृष्ण प्रकाशन द्वारा प्रकाशित इन पुस्तकों के लोकार्पण अवसर पर पत्रकार एम०जे० अकबर, पूर्व विदेश मंत्री दिग्विजय सिंह आदि लोग भी उपस्थित थे। श्री दिग्विजय सिंह ने 'निशाने पर : समय, समाज और राजनीति' और 'पत्रकारिता...' पुस्तक के पेपरबैक संस्करण का विमोचन श्री एम०जे० अकबर ने किया।

उपराष्ट्रपति भैरोसिंह शेखावत ने इस अवसर पर पत्रकारों से कहा है कि वे जन समस्याओं से मुँह न मोड़ें और उस दिशा में लेखनी चलाना बन्द न करें। इसी से समाज और देश का उत्थान होगा। शेखावत ने गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले 26 करोड़ लोगों की उपेक्षा पर चिन्ता जताते हुए कहा कि ये तबका अखबार पढ़ने की जगह वे लोगों के मुँह से यह सुनना चाहता है कि उनकी समस्याओं के समाधान के लिए क्या किया जा रहा है।

उन्होंने कहा'' आजादी के बाद जब पहला चुनाव हुआ तब से आज तक पचास वर्ष हो गए और इन पचास वर्षों में बहुत परिवर्तन हुआ है। इस दौरान पत्रकारिता में कितना अन्तर आया है यह अध्ययन करने की बात है। पत्रकार गाँवों में जाकर ग्रामीण विकास की स्थिति और गरीबी की मूल वजहों का पता लगाएँ और वास्तविकता को निर्भीकता से उजागर करें। पत्रकारों को रचनात्मक खोजी पत्रकारिता करनी चाहिए और जन समस्याओं को तथ्यों के साथ उजागर करना चाहिए।''

हिन्दी के यशस्वी लेखक जैनेन्द्रकुमार की जन्मशती

नववर्ष प्रारम्भ होने के साथ 2 जनवरी 1905 को उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले के कोडियागंज में जन्मे जैनेन्द्रकुमार का जन्म-शताब्दी-वर्ष प्रारम्भ हो गया है। 55 कृतियों के रचनाकार जीवनभर परिस्थितियों से संघर्ष करते रहे।

हिन्दी के अमर कथाकार मुंशी प्रेमचंद ने उन्हें अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था तो राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का कहना था कि अगर हिन्दी के किसी लेखक में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर और शरतचंद्र का मेल है तो वह जैनेन्द्रकुमार ही हैं। वयोवृद्ध हिन्दी लेखक विष्णु प्रभाकर के मन में कभी जैनेन्द्र जैसा लेखक बनने की कामना थी और एक जमाने से उन्हें (छोटा जैनेन्द्र) भी कहा जाता था। ये सारी घटनाएँ विष्णु प्रभाकर द्वारा तीन खण्डों में सम्पादित जैनेन्द्र साक्षी है (पीढ़ियाँ) पुस्तक में दर्ज हैं। इस अवसर पर नामी-गिरामी लेखकों की बैठक में जैनेन्द्रकुमार की जन्मशती का औपचारिक शुभारम्भ किया गया। इसमें डॉक्टर लक्ष्मीमल सिंघवी, कपिला वात्स्यायन, प्रभाष जोशी, अनुपम मिश्र, राजेन्द्र यादव आदि उपस्थित थे।

आपका पत्र

'भारतीय वाङ्मय' पत्रिका नि:सन्देह हिन्दी के संवर्धन का स्तुत्य प्रयास है। सम्पादकीय, राष्ट्रभाषा राजभाषा सारगर्भित, विद्वतापूर्ण एवं विचारोत्तेजक है। सफदर आजमी की कविता 'किताबें कुछ कहना चाहती हैं' अच्छी लगी। **— श्यामसुन्दर 'सुमन'**
सम्पादक 'सामयिकी', भीलवाड़ा

इस छोटी-सी पत्रिका में आपने देश-विदेश के अधिकांश प्रमुख साहित्यिक समाचार देकर एक साथ पूरे संसार की सैर करा दी है। कुछ प्रमुख पुस्तकों की समीक्षाओं और पत्रिकाओं का परिचय का क्रम भी समकालीन साहित्य के पाठकों के ज्ञान को बढ़ाता है।

सम्पादकीय के माध्यम से पुस्तकों की सरकारी खरीद के गोरखधन्धे को निर्भीकतापूर्वक उजागर करने के लिए हार्दिक बधाई। **— जय चक्रवर्ती**
राजभाषा अधिकारी, आई०टी०आई०, रायबरेली

'भारतीय वाङ्मय' का अंक प्राप्त हुआ। आप, सत्रह हजार किमी० दूर होने पर भी अपना स्नेह-स्मरण और कृपा बनाये रखते हैं। हृदय से आभारी हूँ।

10 अक्टूबर को मैं लन्दन गयी हुई थी। एक माह यू०के० प्रवास में अनेक शहरों और संस्थाओं में काव्य-पाठ किया और हिन्दी भाषा और कविताई के जादू का सुख उठाया। सूरिनाम की राजभाषा डच में सर्वाधिक चर्चित अखबार 'दे वारे तेत' में रिपोर्ट भी प्रकाशित हुई। फिलहाल, वाङ्मय के पाठकों के लिए और आपके लिए श्री लक्ष्मीमल सिंघवी अन्तर्राष्ट्रीय कविता सम्मान 2004 की प्रशस्ति-पत्र सहित कुछ और प्रपत्र हैं। मेरी उपलब्धि को आप अपनी उपलब्धि मानते हैं इस आनन्द से भरकर आपको सूचना प्रेषित कर रही हूँ।

आप सभी के लिए असीम शुभकामनाएँ। बाबा विश्वनाथजी से मेरे कल्याण की भी प्रार्थना कर लेंगे तो कृपा होगी। **— पुष्पिता,** सूरिनाम

नवम्बर अंक में प्रकाशित आपका सम्पादकीय 'पुस्तक खरीद में गोरखधंधा' का खूब पोस्टमार्टम करता है। इस क्षेत्र में तो ऐसा घिनौना काम होता है कि कभी-कभी लगता ही नहीं, इन लोगों का विद्या या वाणी सम्बन्धी कार्यों से कोई लेना-देना हो। पुस्तक खरीद प्रभारी अधिकारी खुलेआम मुद्रा माँगते हैं, पुस्तकों की गुणवत्ता से उन्हें कोई मतलब नहीं, उनका ध्यान कमीशन-परसेंटेज पर होता है। इस काले व्यापार के प्रति अभियान चलाने की आवश्यकता है।

— डॉ० वीरेन्द्रकुमार सिंह
हिन्दुस्तान एरोनाटिक्स लि०, सुनाबेड़ा (उड़ीसा)

भारतीय वाङ्मय के प्रत्येक अंक की मैं उत्सुकता से प्रतीक्षा करता हूँ। इसमें साहित्य जगत की जैसी और जितनी सूचनाएँ मिलती हैं, अनायास नहीं। भले ही यह 'विश्वविद्यालय प्रकाशन' का प्रचार माध्यम है, इसके प्रारम्भिक पृष्ठ प्रत्येक साहित्यप्रेमी के लिए, यानी जो साहित्यिक गतिविधि से वीरचित रहना चाहता है, अनिवार्य है। **— महेन्द्र राजा जैन,** इलाहाबाद

स्मृतिशेष

विद्वान प्रधानमंत्री का निधन

पूर्व प्रधानमंत्री **पामुल पुर्ती वेंकर नरसिंह राव** का 23 दिसम्बर 2003 को 83 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। श्री राव बहुभाषाविद् थे। वे 17 भाषाओं को न सिर्फ बोल सकते थे बल्कि उनकी अच्छी जानकारी रखते थे और उनके साहित्य से भी वे परिचित थे। राजनीति के वे आधुनिक चाणक्य कहे जाते थे। विद्वान् होने के साथ वे श्रेष्ठ वक्ता भी थे। उनका साहित्यिक अवदान भी स्मरणीय है—

विश्वनाथ सत्यनारायण के तेलुगु उपन्यास 'बेई पाडागालु' का हिन्दी में अनुवाद 'सहस्रफन' एवं स्व० हरिनारायण आप्टे के प्रसिद्ध मराठी उपन्यास 'धन लक्षत कोण घेटो' का तेलुगु में 'अचला जिवितम' नाम से किया। उन्होंने चर्चित पुस्तक 'इनसाइडर' की भी रचना की। साहित्य, कला एवं विज्ञान के क्षेत्र में रुचि रखने वाले राव की कई रचनाएँ विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी है।

पूर्व प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी ने श्री राव की आत्मपरक कृति 'इनसाइडर' का लोकार्पण किया था।

नाटककार थपलियाल का निधन

वरिष्ठ पत्रकार और हिन्दी तथा गढ़वाली बोली के मूर्धन्य नाटककार **ललितमोहन थपलियाल** का 11 दिसम्बर 2004 को नई दिल्ली में निधन हो गया। वह 83 वर्ष के थे। शोकाकुल परिवार में पत्नी और चार बेटियाँ हैं। श्री थपलियाल पायनियर, नेशनल हेराल्ड, हिन्दुस्तान टाइम्स जैसे अंग्रेजी दैनिकों में लम्बे समय तक पत्रकार रहने के बाद विश्व स्वास्थ्य संगठन में सूचना अधिकारी के पद पर भी रहे।

अली ज़व्वाद जैदी नहीं रहे

उर्दू के सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं स्वतंत्रता सेनानी पद्मश्री **अली ज़व्वाद जैदी** का 90 वर्ष की अवस्था में 6 दिसम्बर को लखनऊ में निधन हो गया। उत्तर प्रदेश सरकार के सूचना विभाग की पत्रिका 'नया दौर' उन्होंने शुरू की थी। आकाशवाणी के प्रतिनिधि के रूप में इराक में कार्य किया था। वे राज्य उर्दू अकादमी के अध्यक्ष भी थे।

विद्यानिवास मिश्र को पत्नी शोक

प्रख्यात साहित्यकार व राज्यसभा सदस्य प्रो० विद्यानिवास मिश्र की धर्मपत्नी **राधिका देवी** का निधन बुधवार 22 दिसम्बर 2004 को अपराह्न 4 बजे हो गया। 77 वर्षीया श्रीमती राधिका देवी पिछले कई दिनों से अस्वस्थ थीं और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के सर सुन्दरलाल अस्पताल के गहन चिकित्सा कक्ष में भरती थीं। लगभग 60 वर्ष तक प्रो० मिश्र का साथ निभाने वाली जीवनसंगिनी का दाह संस्कार गुरुवार को पूर्वाह्न 9 बजे हरिश्चन्द्रघाट पर हुआ।

प्रो० शम्भूनाथ पाण्डेय

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष **प्रो० शम्भूनाथ पाण्डेय** का 29 दिसम्बर 2004 को निधन हो गया।

पुस्तक समीक्षा

खबर की औकात

(उपन्यास)

बच्चन सिंह

प्रथम संस्करण : 2005
ISBN : 81-7124-406-8
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
मूल्य : 300.00

पत्रकारिता जगत के अँधेरे कोटरों के बन्द द्वार खोलता है यह उपन्यास। द्वार ही नहीं खोलता, उन कोटरों में प्रवेश करता है और जो चीजें कोने-अंतरे छिपाकर रखी गई होती हैं, उन्हें बाहर निकाल कर फैला देता है।

पत्रकारिता की दुनिया भी कम रहस्यमय नहीं है लेकिन यह रहस्य तिलिस्मी संसार की तरह लगभग अभेद्य परतों के भीतर छिपा कर रखा गया है। इस मोटी तह को भेदने की हिम्मत बड़े-बड़े महारथियों में नहीं है—उन महारथियों में भी नहीं जो गले तक दलदल में डूबे हुए भी दूसरों की अन्दरूनी दुनियां पर सर संधान किया करते हैं।

राजनीतिक तो इधर ताक-झाँक करने की हिम्मत जुटा ही नहीं पाते, हिन्दी जगत की मोटी मुर्गियाँ भी हाथ में पिसान लगाकर भण्डारी बनने की जुगत में ही लगी रहती हैं। किसी को दलित और स्त्री विमर्श की चिन्ता सताए हुए है तो कोई हिन्दुत्व के मुद्दे को लेकर ही दुबला हुआ जा रहा है। लेकिन यह सब सिर्फ लफ्फाजी के स्तर पर ही हो रहा है। यह लफ्फाजी लिखित हो या मौखिक। ऐसे मठाधीश खुद तो विलासिता में डूबे हुए हैं, दूसरों को प्रवचन देकर सन्तुष्ट हो जाते हैं—गटर-गंगा के बादशाहों की तरह।

मीडिया का बहुत बड़ा क्षेत्र है। इतना बड़ा कि उसे नाप पाना बेहद कठिन है। लगभग असम्भव। लेकिन उसे टुकड़ों में जी सकते हैं। यह उपन्यास इस दिशा में किया गया एक छोटा सा प्रयास है। इसकी सफलता से जुड़ा हुआ है अगला प्रयास जो मीडिया-सत्य के उद्घाटन का मजबूत आधार हो सकता है।

यह उपन्यास पत्रकारों तथा पत्रकारिता के छात्रों के लिए भी पठनीय है।

कृति चिन्तन और मूल्यांकन सन्दर्भ

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

प्रथम संस्करण : 2005
ISBN : 81-7124-401-7
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
मूल्य : 200.00

प्रस्तुत कृति समय-समय पर स्तरीय पत्रिकाओं में लेखक द्वारा लिखे गए समीक्षात्मक निबन्धों का संग्रह है। ये निबन्ध 'आलोचना', 'कसौटी', 'माध्यम', 'नया मानदण्ड', 'हिन्दी अनुशीलन' आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। कृति का नाम भी एक प्रकार से सम्पादकों का ही दिया हुआ है। कृति-विशेष की समीक्षा को किसी सम्पादक ने 'कृति-चिन्तन' शीर्षक से प्रकाशित किया तो अन्य कृतियों की समीक्षा को किसी दूसरे सम्पादक ने 'मूल्यांकन सन्दर्भ' शीर्षक से। दोनों शीर्षकों को सम्मान देते हुए इसे 'कृति चिन्तन और मूल्याङ्कन सन्दर्भ' नाम दे दिया।

निबन्धों के चयन में इस बात का ध्यान रखा गया है कि इनके माध्यम से हिन्दी-साहित्य का पूरा परिदृश्य—पुराना और नया—पाठकों के सामने आ जाय। संग्रह में डॉ० रामविलास शर्मा के साहित्य के विभिन्न पक्षों से सम्बद्ध निबन्धों की संख्या सबसे अधिक है। इसका कारण यह है कि सारे मतभेदों और विवादों के बावजूद आचार्य शुक्ल के बाद हिन्दी-साहित्य के सर्वाधिक ख्यात और स्वीकृत आलोचक डॉ० शर्मा ही हैं। उनसे असहमति हो सकती है, किन्तु उनके व्यापक अध्ययन और आलोचनात्मक मेधा के महत्त्व को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। अन्य निबन्धों को भी सम्पादकों ने सराहा है और स-सम्मान उनका प्रकाशन किया है।

निश्चय ही इस कृति में हिन्दी-साहित्य की व्यवस्थित आलोचना नहीं है, किन्तु इससे पाठकों को लेखक के विस्तृत अध्ययन और गम्भीर अनुशीलन-परक विवेचन की क्षमता का परिचय अवश्य मिलेगा।

लेखक की अन्य समीक्षात्मक कृतियों की भाँति हिन्दी-जगत् इसका भी स्वागत करेगा, ऐसा विश्वास है।

धूर्त्ताख्यान

आचार्य हरिभद्र सूरि

अनुवादक : सम्पादक

डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव

प्रथम संस्करण : 2005
ISBN : 81-902534-4-1
अनुराग प्रकाशन, चौक वाराणसी
मूल्य : 40.00

भारतीय व्यंग्य-काव्यों में 'धूर्त्ताख्यान' (प्राकृत 'धुत्तक्खागं') का अद्वितीय स्थान है इस काव्य के रचयिता आचार्य हरिभद्र सूरि ने प्राकृत के सर्वप्रिय छन्द 'गाथा' में निबद्ध इस व्यंग्यात्मक काव्य की पाँच आख्यानों में रचना की। इसमें पाँच धूर्त्तों की कथा है। प्रत्येक धूर्त्त असम्भव अबुद्धिगम्य और काल्पनिक कथा कहता है, जिसका दूसरा धूर्त्त साथी रामायण, महाभारत, विष्णुपुराण, शिवपुराण आदि ग्रन्थों के समानन्तर कथा-प्रमाण उद्धृत कर अपना समर्थन देता है। अन्तिम पाँचवीं कथा एक धूर्त्त स्त्री कहती है। वह अपने जीवन की अनुभव कथा तो सुनाती ही है और स्वयं ही पौराणिक आख्यानों से उसका समर्थन भी करती है। उस स्त्री ने अपनी चतुराई और पाण्डित्य से उन चारों धूर्त्त पुरुषों को मूर्ख बनाती है।

पौराणिक कथा की रोचक व्यंग्य कथा, पौरोणिक प्रसंगों सहित मनोरंजक तथा ज्ञानवर्धक।

काशी की डायरी

भारतीय संस्कृति की अन्तरात्मा की आवाज

सत्यप्रकाश मित्तल, रामलखन मौर्य

आमुख : **वैद्यनाथ सरस्वती**

प्रथम संस्करण : 2005
ISBN : 81-7124-409-2
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
मूल्य : 200.00

काशी (वाराणसी) स्थित मानव विज्ञान मन्दिर : निर्मलकुमार बोस प्रतिष्ठान द्वारा काशीवासी विधवाओं के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन का अनुभवाश्रित अध्ययन। एक नये समाजशास्त्र की खोज का प्रयास। प्रश्न है भारतीय नारी का : संस्कृति में श्रेष्ठ समाज में उपेक्षित क्यों? इसका उत्तर देखें काशी की डायरी में, जो प्रत्यक्ष अनुभवों को जोड़कर नारी जीवन के आर्थिक एवं परमार्थिक रूप पर प्रकाश डालती है। अधिकांश काशीवासी विधवाएँ आर्थिक रूप से विपन्न हैं पर निर्जीव नहीं। ये विशिष्ट चित्त की खेती करती हैं, उनकी अपनी आचार संहिता है, आचार शुद्धता की व्यवस्था है। यही भारतीय संस्कृति है।

काशी प्रकाश है, इसलिये सारे विश्व के लोग यहाँ आते हैं। भारत और नेपाल से काशीवास करनेवाली चार सौ तैंतीस विधवाओं का प्रतिदर्श इस पुस्तक में समाहित किया गया है। यद्यपि काल एवं व्यक्ति विशेष की समग्र स्थिति की अपेक्षा नहीं की जा सकती, फिर भी काशीवासी विधवाओं ने जो प्रकाश दिखाया है वह अपने आप में अध्यात्म दीप है।

पुस्तक का अन्तिम अध्याय **काशी की डायरी** विधवाओं के सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक जीवन का वर्णन है। इस पुस्तक का उद्देश्य किसी विशिष्ट जाति (वर्ग) की विचारधारा को प्रस्तुत करना नहीं है। प्रत्येक जीवन्त संस्कृति अपने आप में अनुपम है। इसके परिवेश भिन्न होते हैं, भाव भिन्न होते हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ के शब्द एवं भाव दिव्य सन्देश देने के लिए व्यक्त हुआ है।

कालातीत

[कहानी संग्रह]

डॉ० विवेकी राय

ISBN : 81-902534-3-3
अनुराग प्रकाशन, चौक, वाराणसी
पृष्ठ : 96 मूल्य : 100.00

प्रस्तुत कहानी-संग्रह 'कालातीत', डॉ० विवेकी राय का पाँचवाँ कहानी-संग्रह है, जिसमें कुल सत्रह कहानियाँ हैं और प्रत्येक कहानी का उद्देश्य तत्कालीन भारतीय गाँवों की दुर्दशा को सम्मुख करते हुए व्यवस्था के खोखलेपन को उजागर करना है। संग्रह की सभी कहानियाँ पाठकों को उद्वेलित कर कुछ सोचने को विवश करने की क्षमता रखती हैं। डॉ० राय स्वयं इस कहानी-संग्रह को श्रेष्ठतर मानते हैं, और इसमें संकलित 'अतिथि' कहानी को अपनी सर्वोत्तम कहानी। विभिन्न पत्र-

पत्रिकाओं में प्रकाशित होने के कारण संग्रह की अधिकाधिक कहानियाँ चर्चित हैं।

संग्रह की सभी कहानियों की भाषा, भाव और परिवेश के अनुरूप हैं। ये कहानियाँ अलग-अलग कोनों से, गाँवों से हमारा साक्षात्कार कराती चलती हैं। प्रेमचंद अपनी कहानियों में महाजनी समाज से लड़ते-जूझते नजर आते हैं, तो डॉ० विवेकी राय भी अपनी कहानियों में छद्म राजनीति व विकास के नारों से दो-दो हाथ करते दिखाई देते हैं।

गूँगा जहाज

[कहानी संग्रह]

डॉ० विवेकी राय

ISBN : 81-902534-2-5
अनुराग प्रकाशन, चौक, वाराणसी
पृष्ठ : 128 मूल्य : 120.00

डॉ० राय ने इन कहानियों के माध्यम से हास्य-विनोद का पुट देते हुए स्वातन्त्र्योत्तर ग्रामीण समाज के बदलते रूप, उनकी अभावग्रस्तता, उनके धूमिल वस्त्रों में आवेष्ठित सूखे-जर्जर शरीर में आप्लावित रसधारा जिसे करुणा का क्षणिक और सामान्य स्पर्श भी नैराश्य के गहन अन्धकार से ऊपर ला देता है, बहुत बारीकी से प्रस्तुत किया है। राजनीतिक दूकानदारी से उत्पन्न ग्रामीण बौद्धिक तनाव तथा ह्रासमान पूँजीवादी सांस्कृतिक रुग्णता को लेकर नगरों से गाँव को लौटने वाले शिक्षित बाबू (सामन्त) वर्ग द्वारा देहातों को कस्बाई रंग में रँग देने की लालसा, किसान का प्रकृति से संघर्ष और निराशा के झूले पर झूलती हुई जीजीविषा से सम्पृक्त इन कहानियों में पाठकों को मर्माहत कर देने की क्षमता है। 'गरीबी हटाओ' की नपुंसक नारेबाजी तथा विकास, प्रगति और क्रान्ति के अर्थहीन पोस्टरों से ऊबे जनमानस की घुटन, किन्तु जागरूक रहकर आनेवाली पीढ़ी को सचेत करने का स्वर घण्टे की टनटनाहट की भाँति संकलन की कहानियों से मुखर है।

ग्राम्यांचल की विविध झाँकियों से परिपूर्ण कहानियों के इस संग्रह में डॉ० राय ने अपने अन्दर के प्रौढ़ भाषाविद् व कथाशिल्पी को खूब खटाया है, जिसके फलस्वरूप पाठक हमेशा चित्रों के यथार्थ लोक में विचरण करता है। कसावपूर्ण कथ्यों के साथ-साथ लगभग सभी कहानियाँ पाठकों को प्रभाव की गहराई पर लाकर छोड़ती हैं और बिम्बों का ऐसा अहसास कराती हैं कि कभी-कभी (कहानियों का) रिपोर्ताज होने का भ्रम होने लगता है।

भोजपुरी हृदयेश सतसई

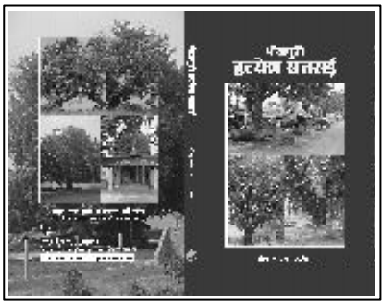

श्रीकृष्ण राय 'हृदयेश'

प्रथम संस्करण : 2004
ISBN : 81-7124-393-2
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
मूल्य : 120.00

हृदयेश की 'भोजपुरी सतसई' भोजपुरी में रचित प्रथम सतसई है। 700 दोहों से युक्त सतसई के प्रत्येक दोहे में भाव एवं चिन्तन की व्यंजना है। कहीं-कहीं ग्राम एवं नगर जीवन की विसंगतियों अथवा समकालीन समाज के अन्तर्विरोधों पर व्यंग्य है। इनमें भोजपुरी की मिट्टी की महक है, लोक जीवन की गमक और सुवास है—

महकत माटी गाँव कऽ,
परलि सहर के बीच।
ए पछिवाँ! तू गन्ध के,
ले अइत फिन खींच॥

हृदयेशजी की सतसई, ये मुक्तक, ये दोहे दो पंक्तियों में बहुत कुछ कह जाते हैं, जिनकी गूँज मन में बस जाती है।

सिंहासन बत्तीसी

(राजा विक्रमादित्य के सिंहासन की बत्तीस पुतलियों की कहानी)

अनुवादक

डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव

प्रथम संस्करण : 2005
ISBN : 81-7124-403-3
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
पृष्ठ : 150 मूल्य : 120.00

जैन क्षेमकर मुनि तेरहवीं शती की सिंहासन द्वात्रिंशिका अथवा द्वात्रिंशत्पुत्तलिका सिंहासन की कथा अत्यन्त रोचक एवं रंजक है। यह राजा विक्रमादित्य के सिंहासन की बत्तीस पुतलियों की कहानी है। राजा भोज जमीन में गड़े हुए विक्रमादित्य के सिंहासन को उखाड़ते हैं, जिसमें बत्तीस पुतलियाँ लगी हुई हैं। राजा भोज जब-जब सिंहासन पर बैठने का उपक्रम करते हैं, वे पुतलियाँ उन्हें राजा विक्रम की पराक्रम-कथा सुनाकर उस आसन पर बैठने के अयोग्य सिद्ध करती हैं और बैठने से रोकती हैं। ये कहानियाँ इतिहास, कला, संस्कृति का बोध कराती हुई ज्ञानवर्धन करती हैं।

Voice of Death – Traditional Thought and Modern Science
मृत्यु की आहट—परम्परागत विचार और आधुनिक विज्ञान

सम्पादक : **प्रो० वैद्यनाथ सरस्वती**

प्राप्ति स्थान : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
मूल्य : 400.00

समालोच्य पुस्तक का विमर्श-विषय मृत्यु की प्रघटना है। इस सम्बन्ध में निम्नलिखित प्रश्न मानव मन को मथते रहते हैं। क्या जीवन और मृत्यु के बीच कोई ऐसा सूत्र है जो दोनों को एक-दूसरे से जोड़ता है? क्या जीवन और मृत्यु समानस्तरीय प्रघटनाएँ हैं अथवा इनकी सत्ता अलग-अलग सिद्धान्तों पर आश्रित है? काल-दृष्टि से इन दोनों में से किसकी सत्ता पहले प्रकट हुई? इन दोनों प्रघटनाओं की सत्ता किन उपादानों पर आश्रित रहती है? चेतन-जगत् में जन्म और मृत्यु की प्रक्रिया कैसे चलती है? क्या ये दोनों प्रघटनाएँ आकाश की भाँति अमूर्त हैं? ब्रह्माण्डीय प्रक्रिया को चलाने में इन दोनों प्रघटनाओं की क्या भूमिका है? क्या जन्म और मृत्यु से ऊपर किसी तीसरी प्रघटना की भी सत्ता है? क्या मानव कभी जन्म एवं मृत्यु जैसे वैश्विक यथार्थ के रहस्य का उद्भेदन करने में सक्षम हो सकता है? मृत्यु के रहस्य को जानकर क्या मानव अमरता की स्थिति में

राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) द्वारा
केन्द्रीय सरकार के मंत्रालयों/उपक्रमों/विभागों/संस्थाओं आदि के पुस्तकालयों के लिए
हिन्दी की स्तरीय पुस्तकों की खरीद हेतु स्वीकृत पुस्तक सूची-2004

पृष्ठ सं०	क्रम०सं०	विषय	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	मूल्य
9	153	इतिहास	स्वदेश की साहित्य चेतना	प्रत्यूष दुबे	100.00
23	429	उपन्यास	मैत्रेयी	प्रभुदयाल मिश्र	120.00
23	433	उपन्यास	लोकऋण	डॉ० विवेकी राय	80.00
26	493	उपन्यास	हस्तिनापुर का शूद्र महामात्य	युगेश्वर	140.00
45	868	कहानी	अनुत्तरित प्रश्न	अनीता पण्डा	70.00
63	1237	विविध	बोलने की कला	भानुशंकर मेहता	250.00
72	1418	निबन्ध	नियति साहित्यकार की	डॉ० सुधाकर	80.00
81	1584	संस्मरण	अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर प्रसाद	पुरुषोत्तमदास मोदी	150.00
82	1618	संस्कृति	एक विश्व : एक संस्कृति	व्रजवल्लभ द्विवेदी	150.00
88	1731	उपन्यास	पांचाली	डॉ० बच्चन सिंह	125.00
88	1732	धर्म दर्शन	सनातन हिन्दू धर्म और और बौद्ध धर्म	श्यामसुन्दर उपाध्याय	75.00
92	1809	जीवनी	भारत के महान् योगी पाँच भाग	विश्वनाथ मुखर्जी	100.00 प्रत्येक

आ सकता है ? अमरता का स्वरूप क्या हो सकता है ? क्या अमरता केवल मानव प्रजाति तक सीमित हो सकती है अथवा इसका विस्तार अन्य प्राणियों तक भी सम्भव है ? क्या कभी प्रलय की स्थिति बन सकती है ? जीवन और मृत्यु के द्वैत के साथ-साथ क्या अमरता की कल्पना की जा सकती है ? क्या दैहिक मृत्यु के बाद आत्मा की सत्ता बनी रहती है ?

जीवन और मृत्यु की इस गम्भीर समस्या पर इस पुस्तक में 18 विद्वानों ने विचार किया है। पुराशास्त्रवेत्ता डॉ० आर०सी० शर्मा, मानवशास्त्री के०एन० सहाय, पाकिस्तान निवासी मानवशास्त्री मजीद खाँ, श्री के०जी० गुरुमूर्ति, समाजशास्त्री अहमद इनाम शास्त्री, भू-भौतिक शास्त्री पी०के० सरस्वती, प्राणिशास्त्री एम०एम० चतुर्वेदी, जीव-विज्ञानी लवीना चौबे, चिकित्साशास्त्री एल० तेनज़िन, वाई०जी० टॉरेस, ओंकारप्रसाद, एम० सूर्यनारायण जनजाति अध्येता, समाजशास्त्री प्रो० बी०डी० त्रिपाठी, हेतुकर झा, धर्मशास्त्री, 'काश्यां मरणान्मृत्यु:' के विचारक यू०के० सिंह ने विभिन्न दृष्टियों, धारणाओं, सन्दर्भों सहित मृत्यु की अवधारणा पर विचार किया है। प्रो० वैद्यनाथ सरस्वती द्वारा सम्पादित यह ग्रन्थ मृत्यु विश्वकोश है।

—वंशीधर त्रिपाठी

आपके द्वारा सुसज्जित 'सम्पादकीय' समय का मापदण्ड है। शिक्षा, संस्कृति, साहित्य, कला, पुस्तकों एवं पत्रिकाओं से जुड़े विशाल व विविध विषयों को एकत्रित कर अपनी सशक्त शैली से 'भारतीय वाङ्मय' को सजाया है।

— श्रीमती जोनाली बरुवा
मोरिढल कालेज, मोरिढल, आसाम

शुक्ल जी का उच्चादर्श

साहित्यमनीषी विचारक रामचन्द्र शुक्ल कालाकांकर रियासत के राजा के सचिव व सहयोगी के रूप में सेवारत थे।

महामना पण्डित मदनमोहन मालवीय के संस्कृत व शिक्षा प्रचार के कार्य में सहयोग देने के लिए शुक्लजी ने अपना त्यागपत्र कालाकांकर नरेश के पास भेज दिया। नरेश तुरन्त उनसे मिलने पहुँचे और पूछा, ''मालवीयजी से आपको कितना मासिक धन मिल पाएगा''।

शुक्लजी ने उत्तर दिया, ''ज्यादा से ज्यादा तीन सौ रुपये महीना''। नरेश के मुख से अनायास निकल गया, ''शुक्लजी, बुद्धि से काम लीजिए। यहाँ आपको तीन हजार व अन्य सुविधाएँ भी मिलती हैं।''

शुक्लजी ने उत्तर दिया, ''मैंने बुद्धि से नहीं, विवेक से निर्णय लेकर अपना जीवन उच्च आदर्शों में लगाने का संकल्प किया है। मालवीयजी के पुनीत कार्यों में सहयोग करने से जो संतोष मिलेगा, उसकी तुलना आर्थिक लाभ-हानि से नहीं की जा सकती।''

कालाकांकर नरेश शुक्लजी के शब्द सुनकर हतप्रभ रह गए और उनके चरणों में झुक गए।

—शिवकुमार गोयल

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र : एक व्यक्तित्व चित्र
ज्ञानचन्द जैन
वटवृक्ष की छाया में : कुमुद नागर
लाई हयात आए : लक्ष्मीधर मालवीय
के सन्दर्भ में
सुप्रसिद्ध कथा लेखिका
डॉ० सूर्यबाला की प्रतिक्रिया

'भारतेन्दु' और 'नागरजी' पर लिखी ये पुस्तकें इण्टरमीडिएट, बी०ए० आदि के छात्रों को अवश्य सुलभ होनी चाहिए। विशेषकर इसलिए क्योंकि प्राय: हमारे पाठ्यक्रमों का सिलेबस अब भी सीमा तक नीरस और साहित्य से विमुख करने का होता हे। प्रारम्भिक कक्षाओं से ही पढ़ाई के प्रति बच्चों की अरुचि का सबसे बड़ा कारण यही है।

'लाई हयात आए' अपने ढंग की अनूठी स्मरण गाथा है, विस्फोट प्रतिभाओं के मानसलोक को जस का तस उजागर करने वाली, किन्तु एक शंका भी जगी; जिन अपने मित्र 'प्रभात' को लेखक ने पुस्तक समर्पित की है, उनकी विक्षिप्तता और असंतुलन को अन्याय संगत ठहराया जा सकता है क्या ? सन्तुलन और विवेक के अभाव में क्षत-विक्षत जीवन।

मील का पत्थर

तमिलनाडु की मुख्यमंत्री जे जयललिता ने राज्य में राष्ट्रीय राजमार्गों पर मील के पत्थरों पर स्थानों के नाम हिन्दी में लिखे जाने पर आपत्ति व्यक्त की है। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को पत्र लिखकर इसमें हस्तक्षेप करने का आग्रह किया है। सुश्री जयललिता ने इस पत्र में कहा है कि राज्य में तमिल और अंग्रेजी का उपयोग होता रहा है और इसका बिना किसी भेदभाव के अनुकरण होना चाहिए।

'एक भारतीय आत्मा' पं० माखनलाल चतुर्वेदी की कविता का स्मरण हो आता है—

मैं हूँ सजनि मील का पत्थर!
अंक पढ़ो चुपचाप पधारो;
मत आरोपो अपनेपन को
मत मुझ पर देवत्व उतारो,
मैं हूँ सजनि मील का पत्थर!

कई बार लोग मुझे दिल्ली आने के लिए कहते हैं लेकिन मैं महसूस करता हूँ कि यहाँ आकर लिख नहीं पाऊँगा। यहाँ लोगों के जीवन पर महानगरीय दबाव काफी है। यहाँ के लोग राजनीति में भी लगे रहते हैं। पहले साहित्यिक राजनीति इलाहाबाद से शुरू होती थी अब दिल्ली से शुरू होती है। आजकल प्रोजेक्शन भी दिल्ली के लेखकों का है और इसका लेखन पर भी नकारात्मक असर पड़ता है। यहाँ एक लेखक बिना लिखे भी मीडिया के माध्यम से आंशिक रूप से जीवनयापन कर सकता है जो छोटे शहरों में सम्भव नहीं है। लेकिन छोटे शहरों का बड़ा लाभ यह है कि वहाँ पर गम्भीर लेखन का काम करते रह सकते हैं।

— गिरिराज किशोर

श्रीमद् एकनाथी भागवत

अनुवादक
ना०वि० सप्रे

वेद में जो नहीं कहा गया गीता ने पूरा किया गीता की कमी की आपूर्ति 'ज्ञानेश्वरी' ने की। उसी प्रकार ज्ञानेश्वरी की कमी को एकनाथी भागवत ने पूरा किया। दत्तात्रेय भगवान के आदेश से सन् 1573 में एकनाथ महाराज ने भागवत के ग्यारहवें स्कन्ध पर विस्तृत और प्रौढ़ टीका लिखी। यदि 'ज्ञानेश्वरी' श्रीमद्भागवत की भावार्थ टीका है तो नाथ भागवत श्रीमद्भागवत के ग्यारहवें स्कन्ध पर सर्वांगपूर्ण टीका है। इसकी रचना पैठण में शुरू हुई और समापन वाराणसी में हुआ। विद्वानों का मत है कि यदि ज्ञानेश्वरी को ठीक तरह से समझना है तो एकनाथी भागवत के अनेक पारायण करने चाहिये, तुकाराम महाराज ने भण्डारा पर्वत पर बैठकर एकनाथी भागवत का एक सहस्र पारायण किये।

पैठण में आरम्भ एकनाथी भागवत मुक्तिक्षेत्र वाराणसी में मणिकर्णिका महातट पर पंचमुद्रा नामक पीठ में कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को पूर्ण हुई। इस ग्रन्थ में भागवत धर्म की परम्परा, स्वरूप विशेषताएँ, ध्येय, साधन आदि भागवत के आधार पर निरूपित हुआ है।

■ **संस्करण : 2004 (प्रथम)** ■ **ISBN :** 81-7124-402-5
❑ पृष्ठ : xvi + 852 ❑ मूल्य : रु० 600.00
■ **आकार : 25 सेमी × 18 सेमी० (क्राउन अठपेजी)** ■ **प्रकार : सजिल्द**

पुस्तक परिचय

चमत्कारिक पौधे

उमेश पाण्डे

भगवती पॉकेट बुक्स
11/7 डॉ० रांगेय राघव मार्ग, आगरा-2

मूल्य : 40.00

वनस्पतियाँ और वृक्ष मनुष्य के लिए प्रकृति के अवदान हैं। दैनिक जीवन में इनकी कितनी उपयोगिता है। पुस्तक से 35 वृक्षों का परिचय तथा उनके औषधीय महत्त्व की जानकारी होती है। सर्वसाधारण के लिए पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है।

धुली धुली शाम का उजास

प्रभा माथुर

3 महिन्द्रा सोसायटी, नगर रोड, पुणे-411 006

मूल्य : 125.00

यह एक सामाजिक उपन्यास है। मध्यवर्गीय परिवार जीवन संघर्ष से जूझते हुए पीड़ित समाज की सेवा के लिए कटिबद्ध है। कॉलेज जीवन की रैगिंग से उत्पन्न कटुता, ल्यूकोडरमा से हीनता ग्रस्त नीता, मेडिकल की पढ़ाई कर मनीष के साथ 'धन्वन्तरि' क्लीनिक चलाती है, तभी निशा नीता को ल्यूकोडरमा के कारण अपमानित करती है। नीता अपने विद्यार्थी जीवन के मित्र विनोद के साथ विदेश जाती है और ल्यूकोडरमा की दवा खोजती है। अपने ऊपर दवा का प्रयोग करती है, वह मर जाती उसका शव भारत आता है, उसकी खोज, उसका बलिदान कितनों को धुली धुली शाम के उजाले का अहसास कराता है।

भींगे पंख

मूल्य : 75.00

प्रभा माथुर का काव्य संग्रह है। लोकगीतों की भावभूमि और लयात्मकता से संपृक्त ये कविताएँ जीवन के विभिन्न क्षणों को अभिव्यक्ति प्रदान करती हैं। मुक्त छन्द में होते हुए भी इन कविताओं में माधुर्य है, गति है।

हवा के वेग से/घाटियों में घंटियाँ बजने लगीं/ अन्तरमन तृप्त हो उठा। देशकाल समाज की समस्त घंटियों की गूँज इस कविता संग्रह में है।

भारतीय वाङ्मय

सम्पादक के आँसू से झर झर झरता बीमार समय।
पर प्रज्ञा भूषित हो जाती पाठक की पढ़ वाङ्मय॥
पुस्तक-दोलत की खरीद में सरकारी हेराफेरी।
स्वार्थ बगीचे को महकाने सारस्वत-सत्ता घेरी॥ 2॥
मगर झूठ के पंख न होते सच की होती सदा विजय।
किसे मिला सम्मान कलम क्या देती है नित नवउपहार।
वाङ्मय सूचित करके हम सब पर करता है उपकार।
विश्वविद्यालय के प्रकाश से है आलोकित सब पुस्तकालय॥ 2॥
गीत-कहानी कहकर अपनी संस्कृति का करता गुणगान।
गोष्ठियों को भी अपने घर में देता है जीवन-दान।
वाङ्मय का शब्द नहीं दे सकते हैं पूरा परिचय॥ 3॥

— डॉ० रागिनी भूषण, जमशेदपुर

दिल्ली उर्दू अकादमी के पुरस्कार

दिल्ली उर्दू अकादमी के वर्ष 2004 के पुरस्कार घोषित किये गये। बहादुर शाह जफर विशिष्ट पुरस्कार उर्दू के सुप्रसिद्ध लेखक **तनवीर अहमद अल्वी** को उर्दू साहित्य और संस्कृति में आजीवन अवदान के लिए प्रदान किया गया। पुरस्कारस्वरूप 1,11,111 रुपये, शाल, सम्मान वस्त्र और प्रशस्ति-पत्र दिया गया।

उर्दू साहित्य के अन्य 21 विद्वानों में प्रत्येक को 21,000 रुपये, शाल, स्मृति चिह्न और प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया।

हिन्दी में कोई साठ सत्तर सम्मान है। 2005 में दस-पाँच और बढ़ेंगे। लेकिन होगा वही जो सब सम्मानों के साथ होता आया है। युवा कवि कथाकार 'टेक ओवर' करेंगे। पचास-पचपन वाली पीढ़ी के बाद की पीढ़ी इस साल अपना दावा ठोक सकती है। उसे नायक चाहिए। इस साल चालीस से नीचे की पीढ़ी को अपना एजेंडा अलग करना होगा। उन्हें नया पढ़ना-लिखना होगा। भेड़चाल छोड़नी होगी। युवा पीढ़ी की रचना को आगे आना होगा। बीस से तीस साल के बीच की पीढ़ी गायब-सी नजर आती है। दो हजार पाँच में कम से कम पाँच कवि तो आगे आने चाहिए। सरकार प्रेमचंद का कुछ न कुछ करके रहेगी। कोई कमेटी है जो प्रेमचंद को लेकर 'कुछ' करने पर आमादा हो गई है। इस कमेटी में 'टायर्ड' और 'रिटायर्ड' लोग ज्यादा हैं। वे प्रेमचंद का अन्तर्राष्ट्रीय या राष्ट्रीय 'मलीदा' जरूर बनायेंगे।

—सुधीश पचौरी

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 6 **जनवरी 2005** **अंक : 1**

प्रधान सम्पादक
पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक
परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क
रु० 50.00

अनुरागकुमार मोदी
द्वारा
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी
द्वारा मुद्रित

E-mail : sales@vvpbooks.com
Website : **www.vvpbooks.com**

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003 RNI No. UPHIN/2000/10104
प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

☎ : Offi. : (0542) 2421472, 2413741, 2413082, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082